ੴ

आसा दी वार

आध्यात्मिकता की ओर एक यात्रा

हिंदी अनुवाद

SikhBookClub.com

SGGSONLINE.COM

विषय-सूची

1. आसा दी वार -- 1
2. अरदास-प्रार्थना -- 75
3. आत्मा की यात्रा पर निकलें: अपनी आत्मा का पोषण करें ---------------------------------- 79
4. यात्रा का दर्शन -- 81
5. महिलाओं की भूमिका -- 83
6. पगड़ी का महत्व -- 86
7. आपकी यात्रा में विनम्रता का मूल सार -- 88

🙏🙏🙏We are distributing Free Gutkas, Divine message of the Guru globally in all the major languages, To Continue this Monumental task, please donate at https://sggsonline.com/donation

This Sewa has been done by Sewadars & SikhBookClub.

This text is only a translation and only gives the essence of the Guru's Divine word. For a more complete understanding, please read the Gurumukhi Sri Guru Granth Sahib Ji. If any errors are noticed, please notify us immediately via email at walnut@gmail.com.

Publisher

© Sikhbookclub.com

Chino, Ca 91710

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
वह अद्वैत ईश्वर (ओंकार स्वरूप) एकमात्र सत्य है। वह आदिपुरुष है, सृष्टि का कर्ता और सर्वशक्तिमान है। उसे न भय है न वैर, और सब पर समान दृष्टि से वह प्रेमस्वरूप है। वहकालातीत, अमर ब्रह्ममूर्ति है, जन्म-मरण से परे, स्वयंजन्मा, और जिसकी प्राप्ति गुरु की कृपा से होती है।

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
राग आसा, प्रथम गुरु: १ ॥

ਵਾਰ ਸਲੋਕਾ ਨਾਲਿ ਸਲੋਕ ਭੀ ਮਹਲੇ ਪਹਿਲੇ ਕੇ ਲਿਖੇ ਟੁੰਡੇ ਅਸ ਰਾਜੈ ਕੀ ਧੁਨੀ ॥
वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥
श्लोकों के साथ वार, श्लोक भी प्रथम गुरु द्वारा लिखे गए हैं, इसे टुंडा-अस राजा की धुन पर गाया जाता है:

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक प्रथम गुरु: १॥

ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਦਿਉਹਾੜੀ ਸਦ ਵਾਰ ॥
बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥
मैं अपने उस गुरु पर दिन में सौ बार बलिहारी जाता हूँ,

ਜਿਨਿ ਮਾਣਸ ਤੇ ਦੇਵਤੇ ਕੀਏ ਕਰਤ ਨ ਲਾਗੀ ਵਾਰ ॥੧॥
जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥१॥
जिसने मनुष्य को देवता बनाने में कोई विलम्ब नहीं किया ॥ १ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
श्लोक, द्वितीय गुरु: २॥

ਜੇ ਸਉ ਚੰਦਾ ਉਗਵਹਿ ਸੂਰਜ ਚੜਹਿ ਹਜਾਰ ॥
जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
यदि सौ चन्द्रमा उदित हो जाएँ और हजारों ही सूर्य का उजाला हो जाए तो भी

ਏਤੇ ਚਾਨਣ ਹੋਦਿਆਂ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰ ॥੨॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥२॥
संसार में इतना प्रकाश होते हुए भी गुरु के बिना घोर अंधकार ही होगा ॥ २॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरुः १॥

ਨਾਨਕ ਗੁਰੂ ਨ ਚੇਤਨੀ ਮਨਿ ਆਪਣੈ ਸੁਚੇਤ ॥
नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥
हे नानक ! जो मनुष्य अपने गुरु को याद नहीं करते और अपने मन में चतुर होने का दावा करते हैं,

ਛੁਟੇ ਤਿਲ ਬੂਆੜ ਜਿਉ ਸੁੰਞੇ ਅੰਦਰਿ ਖੇਤ ॥
छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥
वे निरर्थक तिलों की भाँति व्यर्थ समझकर सूने खेतों में, फेंक दिए जाते हैं।

ਖੇਤੈ ਅੰਦਰਿ ਛੁਟਿਆ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਉ ਨਾਹ ॥
खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥
गुरु नानक कहते हैं कि वे निरर्थक तिल खेत में छोड़ दिए जाते हैं और उनके सौ स्वामी बन जाते हैं।

ਫਲੀਅਹਿ ਫੁਲੀਅਹਿ ਬਪੁੜੇ ਭੀ ਤਨ ਵਿਚਿ ਸੁਆਹ ॥੩॥
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥३॥
वे बेचारे फलते-फूलते हैं परन्तु फिर भी उनके तन में राख ही होती है।॥ ३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਆਪੀਨ੍ਹ੍ਹੈ ਆਪੁ ਸਾਜਿਓ ਆਪੀਨ੍ਹ੍ਹੈ ਰਚਿਓ ਨਾਉ ॥
आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
भगवान् स्वयंभू है, उसने स्वयं ही अपने आपको बनाया तथा स्वयं ही उसने अपना नाम रचा है।

ਦੁਯੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਾਜੀਐ ਕਰਿ ਆਸਣੁ ਡਿਠੋ ਚਾਉ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥
दूसरा उन्होंने सृष्टि की रचना की और इसमें व्याप्त होकर प्रसन्नता से अपना जगत प्रसार देखते हैं।

ਦਾਤਾ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਤੂੰ ਤੁਸਿ ਦੇਵਹਿ ਕਰਹਿ ਪਸਾਉ ॥
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥
हे भगवान् ! हे प्रभु, आप समस्त प्राणियों के स्त्रष्टा और दाता हैं, और प्रसन्न होकर उन पर कृपा बरसाते हैं।

ਤੂੰ ਜਾਣੋਈ ਸਭਸੈ ਦੇ ਲੈਸਹਿ ਜਿੰਦੁ ਕਵਾਉ ॥
तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥
हे प्रभु ! आप सबको जानने वाले हैं, अपनी इच्छानुसार आप जीवों को प्राण देते एवं प्राण लेते है।

ਕਰਿ ਆਸਣੁ ਡਿਠੋ ਚਾਉ ॥੧॥
करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥
आप सृष्टि के भीतर व्याप्त होकर उत्सुकता से (संसार का) खेल देख रहे हैं। ॥ १॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਖੰਡ ਸਚੇ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥
सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥
हे प्रभु ! आपकी रचना के समस्त खंड-ब्रह्माण्ड सत्य हैं।

ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਲੋਅ ਸਚੇ ਆਕਾਰ ॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥
आपकी रचना के चौदह लोक सत्य हैं और आपकी कुदरत के आकार (सूर्य, चन्द्रमा, तारे) भी सत्य हैं।

ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਕਰਣੇ ਸਰਬ ਬੀਚਾਰ ॥
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥
आपके समस्त कार्य एवं सर्व विचार सत्य हैं।

ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਅਮਰੁ ਸਚਾ ਦੀਬਾਣੁ ॥
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥
आपकी आज्ञा सच्ची है और आपका न्याय सच्चा है।

ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਸਚਾ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु
आपकी इच्छा और आदेश – दोनों ही परम सत्य हैं।

ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਕਰਮੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥
सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥
हे प्रभु ! आपकी दया और वरदान – दोनों ही सच्चे हैं, आपकी कृपा ही पहचान है।

ਸਚੇ ਤੁਧੁ ਆਖਹਿ ਲਖ ਕਰੋੜਿ ॥
सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥
लाखों-करोड़ों ही आपको सत्य कहते हैं।

ਸਚੈ ਸਭਿ ਤਾਣਿ ਸਚੈ ਸਭਿ ਜੋਰਿ ॥
सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥
सत्य (प्रभु) में ही समस्त बल एवं समस्त शक्ति है।

ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਸਿਫਤਿ ਸਚੀ ਸਾਲਾਹ ॥
सची तेरी सिफति सची सालाह ॥
आपकी महिमा और शोभा दोनों ही सत्य है।

ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਚੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥
हे सच्चे पातशाह ! आपकी यह कुदरत सत्य है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਧਿਆਇਨਿ ਸਚੁ ॥
नानक सचु धिआइनि सचु ॥
हे नानक ! जो परम सत्य प्रभु का ध्यान करते हैं, वे भी सत्य हैं।

ਜੋ ਮਰਿ ਜੰਮੇ ਸੁ ਕਚੁ ਨਿਕਚੁ ॥੧॥
जो मरि जमे सु कचु निकचु ॥१॥
लेकिन जो जीव जन्मते और मरते रहते हैं वे बिल्कुल कच्चे हैं।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
प्रथम गुरुः १

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਵਡਾ ਨਾਉ ॥
वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥
उस परमात्मा की महिमा बहुत बड़ी है, जिसका नाम सारे विश्व में बहुत बड़ा है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਸਚੁ ਨਿਆਉ ॥
वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥
भगवान् की उपमा बहुत बड़ी है, जिसका न्याय सत्य है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਨਿਹਚਲ ਥਾਉ ॥
वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥
उस स्वामी की महानता इसलिए भी महान है, क्योंकि उनका आसन अटल है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾਣੈ ਆਲਾਉ ॥
वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥
उसकी महानता इसलिए भी बड़ी है क्योंकि वह अपने भक्तों की बात को जानता है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਬੁਝੈ ਸਭਿ ਭਾਉ ॥
वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥
प्रभु का बड़प्पन इसलिए भी बड़ा है क्योंकि वह समस्त लोगों की प्रेम-भावना जान लेते हैं।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਪੁਛਿ ਨ ਦਾਤਿ ॥
वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥
प्रभु की प्रशंसा बहुत बड़ी है क्योंकि वह किसी से परामर्श किए बिना अपनी देन प्रदान करता है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥
वडी वडिआई जा आपे आपि ॥
उसकी बड़ाई इसलिए भी बड़ी है क्योंकि सब कुछ वह आप ही है।

ਨਾਨਕ ਕਾਰ ਨ ਕਥਨੀ ਜਾਇ ॥
नानक कार न कथनी जाइ ॥
हे नानक ! उस प्रभु के कार्यों की व्याख्या नहीं की जा सकती।

ਕੀਤਾ ਕਰਣਾ ਸਰਬ ਰਜਾਇ ॥੨॥
कीता करणा सरब रजाइ ॥२॥
जो कुछ परमात्मा ने किया है, कर रहा है अथवा जो कुछ करेगा सब उनकी अपनी इच्छा है॥ २॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
द्वितीय गुरु: २॥

ਇਹੁ ਜਗੁ ਸਚੈ ਕੀ ਹੈ ਕੋਠੜੀ ਸਚੇ ਕਾ ਵਿਚਿ ਵਾਸੁ ॥
इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥
यह जगत सच्चे प्रभु का घर है और उस परम सत्य का ही इसमें निवास है।

ਇਕਨ੍ਹਾ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਇ ਲਏ ਇਕਨ੍ਹਾ ਹੁਕਮੇ ਕਰੇ ਵਿਣਾਸੁ ॥
इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥
कुछ जीवों को वह अपने आदेश द्वारा स्वयं में लीन कर लेता है और कई जीवों का अपने आदेश द्वारा नाश कर देता है।

ਇਕਨ੍ਹਾ ਭਾਣੈ ਕਢਿ ਲਏ ਇਕਨ੍ਹਾ ਮਾਇਆ ਵਿਚਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥
इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥
अपनी इच्छा से कुछ जीवों को वह माया से बाहर निकाल लेता है और कुछ लोगों का माया के जंजाल में निवास कर देता है।

ਏਵ ਭਿ ਆਖਿ ਨ ਜਾਪਈ ਜਿ ਕਿਸੈ ਆਣੇ ਰਾਸਿ ॥
एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥
यह भी कहा नहीं जा सकता कि वह किसे संवार देगा।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਕਉ ਆਪਿ ਕਰੇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੩॥
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥
हे नानक ! यह भेद गुरु द्वारा ही जाना जाता है, जिसे परमात्मा स्वयं ज्ञान का प्रकाश करता है॥ ३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी ॥

ਨਾਨਕ ਜੀਅ ਉਪਾਇ ਕੈ ਲਿਖਿ ਨਾਵੈ ਧਰਮੁ ਬਹਾਲਿਆ ॥
नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥
हे नानक ! ईश्वर ने जीवों को उत्पन्न करके उनको कर्मों का लेखा-जोखा करने के लिए धर्मराज को नियुक्त किया है।

ਓਥੈ ਸਚੇ ਹੀ ਸਚਿ ਨਿਬੜੈ ਚੁਣਿ ਵਖਿ ਕਢੇ ਜਜਮਾਲਿਆ ॥
ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥
वहाँ धर्मराज के समक्ष सत्यानुसार ही निर्णय होता है और दुष्ट पापियों को चुनकर अलग कर दिया जाता है।

ਥਾਉ ਨ ਪਾਇਨਿ ਕੂੜਿਆਰ ਮੁਹ ਕਾਲ੍ਹੈ ਦੋਜਕਿ ਚਾਲਿਆ ॥
थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥
झूठों को वहाँ स्थान नहीं मिलता और मुँह काला करके उन्हें नरक में धकेल दिया जाता है।

ਤੇਰੈ ਨਾਇ ਰਤੇ ਸੇ ਜਿਣਿ ਗਏ ਹਾਰਿ ਗਏ ਸਿ ਠਗਣ ਵਾਲਿਆ ॥
तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥
हे प्रभु ! जो मनुष्य तेरे नाम में अनुरक्त हैं, वे जीत जाते हैं और जो ठग हैं वे हार जाते हैं।

ਲਿਖਿ ਨਾਵੈ ਧਰਮੁ ਬਹਾਲਿਆ ॥੨॥
लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥
प्रभु ने धर्मराज को जीवों के कर्मों का लेखा लिखने हेतु नियुक्त किया है।॥ २॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਵਿਸਮਾਦੁ ਨਾਦ ਵਿਸਮਾਦੁ ਵੇਦ ॥
विसमादु नाद विसमादु वेद ॥
हे प्रभु ! अद्‌भुत हैं अनेक ध्वनि धाराएँ, अद्‌भुत है वेदों का ज्ञान।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਜੀਅ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੇਦ ॥
विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥
अद्‌भुत हैं प्राणी, अद्‌भुत हैं प्रजातियाँ।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਰੂਪ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰੰਗ ॥
विसमादु रूप विसमादु रंग ॥
विभिन्न प्रकार के रूप एवं रंग बड़े अदभुत हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਨਾਗੇ ਫਿਰਹਿ ਜੰਤ ॥
विसमादु नागे फिरहि जंत ॥
वे जीव जो नग्न घूमते हैं, सब विस्मयबोधी हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਪਉਣੁ ਵਿਸਮਾਦੁ ਪਾਣੀ ॥
विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥
पवन और जल भी विस्मय का कारण है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਅਗਨੀ ਖੇਡਹਿ ਵਿਡਾਣੀ ॥
विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥
बड़ी हैरानी है कि अनेक प्रकार की अग्नियाँ अदभुत खेल खेलती हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਧਰਤੀ ਵਿਸਮਾਦੁ ਖਾਣੀ ॥
विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥
मैं इस धरती को देखकर चकित हूँ, जो हर जीवन रूप को अपने विविध स्रोतों से पोषण देती है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਾਦਿ ਲਗਹਿ ਪਰਾਣੀ ॥
विसमादु सादि लगहि पराणी ॥
जीव जिन पदार्थों के स्वाद में लगे हुए हैं, ये भी विस्मयकारक हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਸੰਜੋਗੁ ਵਿਸਮਾਦੁ ਵਿਜੋਗੁ ॥
विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥
संयोग और वियोग भी विचित्र हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੁਖ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੋਗੁ ॥
विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥
संसार की भूख एवं भोग-विलास भी हैरानी का कारण बनी हुई है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਿਫਤਿ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਾਲਾਹ ॥
विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥
भगवान् की महिमा-स्तुति भी आश्चर्यजनक है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਉਝੜ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰਾਹ ॥
विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥
जीव का कुमार्गगामी होना और सन्मार्ग पर आ जाना भी विचित्र है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਨੇੜੈ ਵਿਸਮਾਦੁ ਦੂਰਿ ॥
विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥
यह एक बड़ा ही विस्मय का विषय है कि परमात्मा जीवों के पास भी है और उनसे दूर भी है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਦੇਖੈ ਹਾਜਰਾ ਹਜੂਰਿ ॥
विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥
वे भक्त अदभुत हैं जो परमात्मा को अपने नेत्रों से प्रत्यक्ष देखते हैं।

ਵੇਖਿ ਵਿਡਾਣੁ ਰਹਿਆ ਵਿਸਮਾਦੁ ॥
वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु! आपकी कुदरत का बड़ा विस्मय देखकर मैं आश्चर्यचकित हो रहा हूँ।

ਨਾਨਕ ਬੁਝਣੁ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ॥੧॥
नानक बुझणु पूरै भागि ॥१॥
आपकी सृष्टि के इस अदभुत खेल को पूर्ण भाग्यवान ही समझ सकता है। १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा:॥

ਕੁਦਰਤਿ ਦਿਸੈ ਕੁਦਰਤਿ ਸੁਣੀਐ ਕੁਦਰਤਿ ਭਉ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥
कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥
जो कुछ भी प्रकृति में देखा या सुना जाता है, वह आपकी ही शक्ति का अद्भुत चमत्कार है। आपकी श्रद्धा से भरा हुआ भय, जो शांति का मूल है; यह सब आपकी लीला है।

ਕੁਦਰਤਿ ਪਾਤਾਲੀ ਆਕਾਸੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਰਬ ਆਕਾਰੁ ॥
कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥
यह आपकी शक्ति है, जो पाताल, आकाश और ब्रह्मांड के सभी रूपों में प्रदर्शित हो रही है।

ਕੁਦਰਤਿ ਵੇਦ ਪੁਰਾਣ ਕਤੇਬਾ ਕੁਦਰਤਿ ਸਰਬ ਵੀਚਾਰੁ ॥
कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥
आपकी शक्ति द्वारा ही वेद, पुराण, शरीयत इत्यादि धार्मिक ग्रंथों में व्यक्त विचार सम्भव हुए हैं।

ਕੁਦਰਤਿ ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਪੈਨ੍ਹਣੁ ਕੁਦਰਤਿ ਸਰਬ ਪਿਆਰੁ ॥
कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥
आपकी शक्ति अनुसार ही खाना, पीना एवं पहनना है, आपकी शक्ति द्वारा ही सब ओर प्रेम-भावना है।

ਕੁਦਰਤਿ ਜਾਤੀ ਜਿਨਸੀ ਰੰਗੀ ਕੁਦਰਤਿ ਜੀਅ ਜਹਾਨ ॥
कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥
आपकी शक्ति अनुसार ही जगत् के जीवों में जातियाँ, रंग एवं प्रकार हैं।

ਕੁਦਰਤਿ ਨੇਕੀਆ ਕੁਦਰਤਿ ਬਦੀਆ ਕੁਦਰਤਿ ਮਾਨੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥
आपकी शक्ति अनुसार ही अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ हैं, आपकी शक्ति अनुसार ही मान एवं अभिमान है।

ਕੁਦਰਤਿ ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੁ ਕੁਦਰਤਿ ਧਰਤੀ ਖਾਕੁ ॥
कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥
आपकी शक्ति अनुसार ही पवन, पानी एवं अग्नि है, आपकी शक्ति अनुसार ही धरती एवं मिट्टी है।

ਸਭ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਤੂੰ ਕਾਦਿਰੁ ਕਰਤਾ ਪਾਕੀ ਨਾਈ ਪਾਕੁ ॥
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥
हे प्रभु! यह सब आपकी शक्ति है, आप अपनी सृष्टि के स्वामी एवं रचयिता है और अपने पावन नाम के कारण आपकी बड़ी महिमा है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਵੇਖੈ ਵਰਤੈ ਤਾਕੋ ਤਾਕੁ ॥੨॥
नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥२॥
हे नानक ! प्रभु अपने आदेशानुसार अपनी सृष्टि को देखते एवं क्रियाशील है, वह सर्वव्यापक है एवं अपने विधान अनुसार ही सबकुछ करते हैं। ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी ॥

ਆਪੀਨੑੈ ਭੋਗ ਭੋਗਿ ਕੈ ਹੋਇ ਭਸਮੜਿ ਭਉਰੁ ਸਿਧਾਇਆ ॥
आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥
मनुष्य जगत् में अपने भोग भोगकर मरणोपरांत ढेरी हो जाता है अर्थात् आत्मा चली जाती है।

ਵਡਾ ਹੋਆ ਦੁਨੀਦਾਰੁ ਗਲਿ ਸੰਗਲੁ ਘਤਿ ਚਲਾਇਆ ॥
वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥
जब मनुष्य दुनिया के धंधों में बड़ा मानकर चला जाता है तो उसकी गर्दन में जंजीर डाल दी जाती है और उसे आगे धकेल दिया जाता है।

ਅਗੈ ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਵਾਚੀਐ ਬਹਿ ਲੇਖਾ ਕਰਿ ਸਮਝਾਇਆ ॥
अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥
वहाँ उसके कर्मों का विचार किया जाता है और उसे बिठा कर उसका लेखा समझाया जाता है।

ਥਾਉ ਨ ਹੋਵੀ ਪਉਦੀਈ ਹੁਣਿ ਸੁਣੀਐ ਕਿਆ ਰੂਆਇਆ ॥
थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥
जब उसे दण्ड मिलता है तो उसे कोई स्थान नहीं मिलता, अब उसका विलाप कौन सुनेगा?

ਮਨਿ ਅੰਧੈ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੩॥
मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥३॥
ज्ञानहीन मनुष्य ने अपना दुर्लभ जीवन व्यर्थ ही नष्ट कर लिया ॥ ३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा:॥

ਭੈ ਵਿਚਿ ਪਵਣੁ ਵਹੈ ਸਦਵਾਉ ॥
भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥
प्रभु के श्रद्धेय भय में अनेक प्रकार की पवन हमेशा चलती रहती है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਚਲਹਿ ਲਖ ਦਰੀਆਉ ॥
भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥
परमात्मा के श्रद्धेय भय में ही लाखों दरिया बहते हैं।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਅਗਨਿ ਕਢੈ ਵੇਗਾਰਿ ॥
भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥
उसके श्रद्धेय भय में ही अग्नि अपना कार्य करती है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਧਰਤੀ ਦਬੀ ਭਾਰਿ ॥
भै विचि धरती दबी भारि ॥
ईश्वर के श्रद्धेय भय से पृथ्वी सृष्टि का भार उठा रही है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਇੰਦੁ ਫਿਰੈ ਸਿਰ ਭਾਰਿ ॥
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥
परमेश्वर के आदेश में ही इन्द्र बादल बनकर सिर पर बोझ लिए चलता फिरता है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਰਾਜਾ ਧਰਮ ਦੁਆਰੁ ॥
भै विचि राजा धरम दुआरु ॥
प्रभु के श्रद्धेय भय में ही धर्मराज उसके द्वार पर खड़ा है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਸੂਰਜੁ ਭੈ ਵਿਚਿ ਚੰਦੁ ॥
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥
प्रभु के श्रद्धेय भय में ही सूर्य एवं चंद्रमा सक्रिय हैं।

ਕੋਹ ਕਰੋੜੀ ਚਲਤ ਨ ਅੰਤੁ ॥
कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥
करोड़ों कोस चलते रहने के पश्चात् भी उनकी यात्रा का कोई अन्त नहीं।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਸਿਧ ਬੁਧ ਸੁਰ ਨਾਥ ॥
भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥
सिद्ध, बुद्ध, देवते एवं नाथ-योगी ईश्वर केश्रद्धेय भय में ही विचरण करते हैं।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਆਡਾਣੇ ਆਕਾਸ ॥
भै विचि आडाणे आकास ॥
प्रभु के श्रद्धेय भय में ही आकाश चारों ओर फैला हुआ है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸੂਰ ॥
भै विचि जोध महाबल सूर ॥
प्रभु के भय में ही बड़े-बड़े योद्धा, महाबली एवं शूरवीर क्रियाशील हैं

ਭੈ ਵਿਚਿ ਆਵਹਿ ਜਾਵਹਿ ਪੂਰ ॥
भै विचि आवहि जावहि पूर ॥
प्रभु के भय में ही झुण्ड के झुण्ड जन्मते-मरते रहते हैं।

ਸਗਲਿਆ ਭਉ ਲਿਖਿਆ ਸਿਰਿ ਲੇਖੁ ॥
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥
प्रभु ने अपने भय में ही सबका भाग्य निश्चित कर रखा है।

ਨਾਨਕ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਸਚੁ ਏਕੁ ॥੧॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥१॥
हे नानक ! एक सत्यस्वरूप निरंकार परमात्मा ही निर्भय है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਨਾਨਕ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਰਾਮ ਰਵਾਲ ॥
नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥
हे नानक ! एक निरंकार प्रभु ही निडर है, अन्य तो राम जैसे कितने ही उसके चरणों की धूल हैं।

ਕੇਤੀਆ ਕੰਨ੍ਹ ਕਹਾਣੀਆ ਕੇਤੇ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰ ॥
केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥
कृष्ण-कन्हैया की लीला की अनेक कहानियों दुनिया में प्रचलित हैं और कितने ही पण्डित वेदों का उच्चारण करने वाले हैं।

ਕੇਤੇ ਨਚਹਿ ਮੰਗਤੇ ਗਿੜਿ ਮੁੜਿ ਪੂਰਹਿ ਤਾਲ ॥
केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥
अनेक भिखारी नाचने वाले हैं और बार-बार ताल पर झूमते हैं।

ਬਾਜਾਰੀ ਬਾਜਾਰ ਮਹਿ ਆਇ ਕਢਹਿ ਬਾਜਾਰ ॥
बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥
रासधारी बाजार में आते हैं और झूठी रास दिखाते हैं।

ਗਾਵਹਿ ਰਾਜੇ ਰਾਣੀਆ ਬੋਲਹਿ ਆਲ ਪਤਾਲ ॥
गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥
वे राजे-रानियाँ बनकर गाते हैं और अप्रासंगिक कहानियाँ सुनाते हैं।

ਲਖ ਟਕਿਆ ਕੇ ਮੁੰਦੜੇ ਲਖ ਟਕਿਆ ਕੇ ਹਾਰ ॥
लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥
वे लाखों रुपए के कानों के कुण्डल एवं लाखों रुपए के हार पहनते हैं।

ਜਿਤੁ ਤਨਿ ਪਾਈਅਹਿ ਨਾਨਕਾ ਸੇ ਤਨ ਹੋਵਹਿ ਛਾਰ ॥
जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥
हे नानक ! जिन शरीरों पर वे आभूषण पहनते हैं, वह शरीर तो राख बन जाते हैं।

ਗਿਆਨੁ ਨ ਗਲੀਈ ਢੂਢੀਐ ਕਥਨਾ ਕਰੜਾ ਸਾਰੁ ॥
गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥
ज्ञान की प्राप्ति केवल बातों से नहीं होती, दिव्य ज्ञान की प्राप्ति को समझाना, मानो लोहे को चबाने जैसा कठिन है।

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਤਾ ਪਾਈਐ ਹੋਰ ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਕਮੁ ਖੁਆਰੁ ॥੨॥
करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥
यदि भगवान् की कृपा हो जाए तो ही ज्ञान प्राप्त होता है, अन्य चतुराई एवं छल-कपट तो केवल निराशा ही देते हैं। २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ ਨਦਰੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥
यदि दयालु प्रभु करुणा-दृष्टि करे तो उसकी कृपा से सच्चे गुरु की प्राप्ति होती है।

ਏਹੁ ਜੀਉ ਬਹੁਤੇ ਜਨਮ ਭਰੰਮਿਆ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥
एहु जीउ बहुते जनम भरमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥
जब तक सतगुरु ने उसे दिव्य नाम का उपदेश नहीं दिया, तब तक यह जीवात्मा अनेक जन्मों में भटकती रही।

ਸਤਿਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਕੋ ਨਹੀ ਸਭਿ ਸੁਣਿਅਹੁ ਲੋਕ ਸਬਾਇਆ ॥
सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥
हे संसार के सब लोगो ! ध्यान से सुनो, सतगुरु जैसा कोई परोपकारी नहीं है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਜਿਨ੍ਹੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥
जो मनुष्य अपने मन से अहंकार मिटा देता है उसे सतगुरु मिलते हैं और सच्चे गुरु के माध्यम से सत्य की प्राप्ति होती है।

ਜਿਨਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥੪॥
जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥
सच्चा गुरु ही सत्य के रहस्य को समझाता है॥ ४॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरुः ॥

ਘੜੀਆ ਸਭੇ ਗੋਪੀਆ ਪਹਰ ਕੰਨ੍ ਗੋਪਾਲ ॥
घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥
जैसे रासधारी रास करते हैं, वैसे ही परमात्मा की भी रासलीला हो रही है। इस रासलीला में घड़ियाँ नृत्य करने वाली गोपियाँ हैं और सारे प्रहर कान्हा-गोपाल है।

ਗਹਣੇ ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੁ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਅਵਤਾਰ ॥
गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥
पवन, पानी एवं अग्नि इस रास लीला के पात्रों के आभूषण हैं और सूर्य एवं चाँद स्वांग धारण करने वाले नट हैं।

ਸਗਲੀ ਧਰਤੀ ਮਾਲੁ ਧਨੁ ਵਰਤਣਿ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲ ॥
सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥
समस्त धरती नाटक करने वालों का माल, धन है परन्तु ये सभी जंजाल ही हैं।

ਨਾਨਕ ਮੁਸੈ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੀ ਖਾਇ ਗਇਆ ਜਮਕਾਲੁ ॥੧॥
नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥१॥
हे नानक ! ज्ञान से विहीन दुनिया इस नाटक में लुट जाती है और यमदूत उसे अपना ग्रास बना लेता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: ॥

ਵਾਇਨਿ ਚੇਲੇ ਨਚਨਿ ਗੁਰ ॥
वाइनि चेले नचनि गुर ॥
(समाज की अदभुत विडम्बना है कि) चेले ताल बजाते हैं और उनके गुरु नाचते हैं।

ਪੈਰ ਹਲਾਇਨਿ ਫੇਰਨ੍ਹਿ ਸਿਰ ॥
पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥
वह धुंघरु बांधकर अपने पैर हिलाते हैं और मस्त होकर अपना सिर घुमाते हैं।

ਉਡਿ ਉਡਿ ਰਾਵਾ ਝਾਟੈ ਪਾਇ ॥
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥
उनके सिर के बालों पर उड़-उड़कर धूल पड़ती है।

ਵੇਖੈ ਲੋਕੁ ਹਸੈ ਘਰਿ ਜਾਇ ॥
वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥
यह तमाशा देखकर लोग हँसते हैं और घर को चले जाते हैं।

ਰੋਟੀਆ ਕਾਰਣਿ ਪੂਰਹਿ ਤਾਲ ॥
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥
रोटी के कारण वे ताल मिलाते हैं

ਆਪੁ ਪਛਾੜਹਿ ਧਰਤੀ ਨਾਲਿ ॥
आपु पछाड़हि धरती नालि ॥
वह अपने आपको धरती पर पछाड़ते हैं।

ਗਾਵਨਿ ਗੋਪੀਆ ਗਾਵਨਿ ਕਾਨ੍ ॥
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥
(संसार के मंच पर नाटक करने वाले जीव) गोपियों एवं कान्हा बनकर गाते हैं।

ਗਾਵਨਿ ਸੀਤਾ ਰਾਜੇ ਰਾਮ ॥
गावनि सीता राजे राम ॥
सीता, राजा राम बनकर गाते हैं।

ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ॥
निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥
किन्तु निर्भय, निरंकार प्रभु का ही नाम सत्य है

ਜਾ ਕਾ ਕੀਆ ਸਗਲ ਜਹਾਨੁ ॥
जा का कीआ सगल जहानु ॥
जिसने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की है।

ਸੇਵਕ ਸੇਵਹਿ ਕਰਮਿ ਚੜਾਉ ॥
सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥
जिन सेवकों का भाग्य उदय होता है, वे प्रभु की सेवा करते हैं।

ਭਿੰਨੀ ਰੈਣਿ ਜਿਨ੍ਾ ਮਨਿ ਚਾਉ ॥
भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥
जिनके मन में प्रभु प्रेम का इच्छा है उनकी रात्रि सुहावनी हो जाती है।

ਸਿਖੀ ਸਿਖਿਆ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥
सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥
जिन्होंने गुरु विचारधारा द्वारा यह शिक्षा सीख ली है,

ਨਦਰੀ ਕਰਮਿ ਲਘਾਏ ਪਾਰਿ ॥
नदरी करमि लघाए पारि ॥
दयालु स्वामी अपनी कृपा-दृष्टि से ही उन्हें मुक्ति प्रदान कर देते हैं।

ਕੋਲੂ ਚਰਖਾ ਚਕੀ ਚਕੁ ॥
कोलू चरखा चकी चकु ॥
अनेकों ही कोल्हू, चरखा, चक्कियों एवं चाक हैं।

ਥਲ ਵਾਰੋਲੇ ਬਹੁਤੁ ਅਨੰਤੁ ॥
थल वारोले बहुतु अनंतु ॥
रेगिस्तान में असंख्य, अनगिनत बवंडर।

ਲਾਟੂ ਮਾਧਾਣੀਆ ਅਨਗਾਹ ॥
लाटू माधाणीआ अनगाह ॥
अनेकों ही लट्टू, मधानियाँ एवं अन्न निकालने के यन्त्र हैं।

ਪੰਖੀ ਭਉਦੀਆ ਲੈਨਿ ਨ ਸਾਹ ॥
पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥
पक्षी घूमते हुए दम नहीं लेते।

ਸੂਐ ਚਾੜਿ ਭਵਾਈਅਹਿ ਜੰਤ ॥
सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥
कई यंत्र लोहे के शूल पर चढ़ाकर घुमाए जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਭਉਦਿਆ ਗਣਤ ਨ ਅੰਤ ॥
नानक भउदिआ गणत न अंत ॥
हे नानक ! घूमने वाले एवं यंत्रों की गणना का कोई अन्त नहीं।

ਬੰਧਨ ਬੰਧਿ ਭਵਾਏ ਸੋਇ ॥
बंधन बंधि भवाए सोइ ॥
जो प्राणी माया के बन्धनों में फंस जाते हैं, उन्हें धर्मराज ऐसे ही कर्मों के अनुसार घुमाता है।

ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਨਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥
अपने किए कर्मो अनुसार ही प्रत्येक जीव नृत्य करता है।

ਨਚਿ ਨਚਿ ਹਸਹਿ ਚਲਹਿ ਸੇ ਰੋਇ ॥
नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥
जगत् की माया में फँसकर जो लोग जीवन भर इधर-उधर भागते रहते हैं, वे अपने अंतिम प्रस्थान पर रोएँगे।

ਉਡਿ ਨ ਜਾਹੀ ਸਿਧ ਨ ਹੋਹਿ ॥
उडि न जाही सिध न होहि ॥
वे न तो उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त कर पाते हैं और न ही सांसारिक मामलों में पारंगत हो पाते हैं।

ਨਚਣੁ ਕੁਦਣੁ ਮਨ ਕਾ ਚਾਉ ॥
नचणु कुदणु मन का चाउ ॥
उनका नाचना-कूदना सब मन का मनोरंजन मात्र है।

ਨਾਨਕ ਜਿਨ੍ ਮਨਿ ਭਉ ਤਿਨ੍ਾ ਮਨਿ ਭਾਉ ॥੨॥
नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥२॥
हे नानक ! जिनके हृदय में प्रभु का भय विद्यमान है, उनके हृदय में ही उसका प्रेम है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी ॥

ਨਾਉ ਤੇਰਾ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਹੈ ਨਾਇ ਲਇਐ ਨਰਕਿ ਨ ਜਾਈਐ ॥
नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥
हे प्रभु ! आपका नाम निरंकार है और आपका नाम याद करने से मनुष्य नरक में नहीं जाता।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਦਾ ਦੇ ਖਾਜੈ ਆਖਿ ਗਵਾਈਐ ॥
जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥
प्राण एवं तन उस प्रभु के दिए हुए हैं, जो कुछ वह देता है, जीव वही कुछ खाता है। अन्य कुछ कहना निरर्थक है।

ਜੇ ਲੋੜਹਿ ਚੰਗਾ ਆਪਣਾ ਕਰਿ ਪੁੰਨਹੁ ਨੀਚੁ ਸਦਾਈਐ ॥
जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥
यदि आप अपना कल्याण चाहते हैं तो पुण्य कर्म करो और विनम्र महसूस करो।

ਜੇ ਜਰਵਾਣਾ ਪਰਹਰੈ ਜਰੁ ਵੇਸ ਕਰੇਦੀ ਆਈਐ ॥
जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥
यदि कोई जोरावर मनुष्य बुढ़ापे को दूर रखना चाहे तो भी बुढ़ापा अपना वेष धारण करके आ ही जाता है।

ਕੋ ਰਹੈ ਨ ਭਰੀਐ ਪਾਈਐ ॥੫॥
को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥
जब मनुष्य के जीवन की घड़ियाँ पूरी हो जाती हैं तो दुनिया में कोई नहीं रह सकता अर्थात् आयु पूर्ण होने के बाद मृत्यु ही प्राप्त होती है।॥ ५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा:॥

ਮੁਸਲਮਾਨਾ ਸਿਫਤਿ ਸਰੀਅਤਿ ਪੜਿ ਪੜਿ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥
मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥
मुसलमानों को शरीअत की प्रशंसा सबसे अच्छी लगती है और वे उसे पढ़-पढ़कर विचार करते हैं (अर्थात् शरीअत को ऊँचा मानते हुए उसे ही कानून समझते हैं)।

ਬੰਦੇ ਸੇ ਜਿ ਪਵਹਿ ਵਿਚਿ ਬੰਦੀ ਵੇਖਣ ਕਉ ਦੀਦਾਰੁ ॥
बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥
मुसलमानों का यही मानना है कि खुदा का प्यारा बन्दा वही है जो अल्लाह के दर्शन-दीदार करने हेतु शरीअत की बन्दिश में पड़ता है।

ਹਿੰਦੂ ਸਾਲਾਹੀ ਸਾਲਾਹਨਿ ਦਰਸਨਿ ਰੂਪਿ ਅਪਾਰੁ ॥
हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥
हिन्दू शास्त्र द्वारा प्रशंसनीय भगवान् की स्तुति करते हैं, जिसका रूप बेअंत सुन्दर है।

ਤੀਰਥਿ ਨਾਵਹਿ ਅਰਚਾ ਪੂਜਾ ਅਗਰ ਵਾਸੁ ਬਹਕਾਰੁ ॥
तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥
वे तीर्थ-स्थानों पर स्नान करते, देवताओं की मूर्तियों की पूजा-अर्चना करते हैं और चन्दन की सुगन्धि का प्रयोग करते हैं।

ਜੋਗੀ ਸੁੰਨਿ ਧਿਆਵਨ੍ਹਿ ਜੇਤੇ ਅਲਖ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥
जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥
योगी समाधि लगाकर निर्गुण प्रभु का ध्यान करते हैं और करतार को 'अलख' नाम से पुकारते हैं।

ਸੂਖਮ ਮੂਰਤਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਕਾਇਆ ਕਾ ਆਕਾਰੁ ॥
सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥
योगियों के अनुसार भगवान् निराकार, निर्लिप्त और सर्वव्यापक हैं; संपूर्ण ब्रह्मांड उनका ही स्वरूप है।

ਸਤੀਆ ਮਨਿ ਸੰਤੋਖੁ ਉਪਜੈ ਦੇਣੈ ਕੈ ਵੀਚਾਰਿ ॥
सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥
दान देने के बारे में विचार करके दानी के मन में संतोष उत्पन्न होता है।

ਦੇ ਦੇ ਮੰਗਹਿ ਸਹਸਾ ਗੂਣਾ ਸੋਭ ਕਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ॥
दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥
वें स्वार्थवश दान करते हैं, ईश्वर से उसका कई गुना लौटाने की अपेक्षा रखते हैं और दुनिया से प्रशंसा की आशा करते हैं।

ਚੋਰਾ ਜਾਰਾ ਤੈ ਕੂੜਿਆਰਾ ਖਾਰਾਬਾ ਵੇਕਾਰ ॥
चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥
चोर, व्यभिचारी तथा झूठे आचरण वाले पापी विकारी ऐसे लोग भी हैं,

ਇਕਿ ਹੋਦਾ ਖਾਇ ਚਲਹਿ ਐਥਾਊ ਤਿਨਾ ਭਿ ਕਾਈ ਕਾਰ ॥
इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥
पाप करते हुए वे अपने पूर्व पुण्यों को व्यर्थ कर अंततः खाली हाथ इस दुनिया से चले जाते हैं - यह उनका व्यर्थ कर्म है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਜੀਆ ਪੁਰੀਆ ਲੋਆ ਆਕਾਰਾ ਆਕਾਰ ॥
जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥
समुद्र, धरती, देवताओं की पुरियों, लोकों, सूर्य, चन्द्रमा एवं तारों वाले इस जगत में बेअंत जीव रहते हैं।

ਓਇ ਜਿ ਆਖਹਿ ਸੁ ਤੂੰਹੈ ਜਾਣਹਿ ਤਿਨਾ ਭਿ ਤੇਰੀ ਸਾਰ ॥
ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥
हे प्रभु ! यह जीव जो कुछ कहते हैं, आप उन्हें जानते हैं। तू ही उनका भरण-पोषण करता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਭੁਖ ਸਾਲਾਹਣੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥
नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥
हे नानक ! भक्तों को परमात्मा की महिमा-स्तुति करने की भूख लगी रहती है और उसका सत्य नाम ही उनका आधार है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਣਵੰਤਿਆ ਪਾ ਛਾਰੁ ॥੧॥
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥१॥
वे गुणवान पवित्र-पुरुषों के चरणों की धूल बनकर रात-दिन सदा आनंद में रहते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १ ॥

ਮਿਟੀ ਮੁਸਲਮਾਨ ਕੀ ਪੇੜੈ ਪਈ ਕੁਮ੍ਹਿਆਰ ॥
मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
मुसलमान जब मरता है तो उसे दफनाया जाता है और उसका शरीर मिट्टी बन जाता है लेकिन जब वह मिट्टी कुम्हार के पास आती है तो

ਘੜਿ ਭਾਂਡੇ ਇਟਾ ਕੀਆ ਜਲਦੀ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥
वह इससे बर्तन एवं ईंटें बनाता है, यह जलती हुई मिट्टी चीखती-चिल्लाती है।

ਜਲਿ ਜਲਿ ਰੋਵੈ ਬਪੁੜੀ ਝੜਿ ਝੜਿ ਪਵਹਿ ਅੰਗਿਆਰ ॥
जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥
बेचारी मिट्टी जल-जलकर रोती है और जलते हुए अंगारे उस पर गिरते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕਾਰਣੁ ਕੀਆ ਸੋ ਜਾਣੈ ਕਰਤਾਰੁ ॥੨॥
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥२॥
गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जिस कर्ता प्रभु ने यह संसार बनाया है, वही इसका भेद जानते हैं कि जलाना भला है अथवा दफन करना ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
सच्चे गुरु के बिना किसी भी मनुष्य को प्रभु प्राप्त नहीं हुआ और ना कभी होगा क्योंकि

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਆਪੁ ਰਖਿਓਨੁ ਕਰਿ ਪਰਗਟੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਇਆ ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥
सतगुरु के अन्तर्मन में प्रभु ने स्वयं को रखा हुआ है, मैंने यह तथ्य प्रत्यक्ष तौर पर कहकर सबको सुना दिया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥
जिन्होंने अपने अन्तर से सांसारिक मोह को मिटा दिया है, वे सतगुरु से मिलकर मुक्त हो गए हैं।

ਉਤਮੁ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਸਚੇ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਪਾਇਆ ॥੬॥
उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥६॥
उत्तम विचार यही है कि जिसने अपना चित्त सत्य से लगा लिया है,उसने जगत का जीवनदाता प्रभु पा लिया है॥ ६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक, महला १॥

ਹਉ ਵਿਚਿ ਆਇਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਗਇਆ ॥
हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥
मनुष्य अहंकार में जगत् में आया है और अहंकार में ही जगत् से चला गया है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਜੰਮਿਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਮੁਆ ॥
हउ विचि जमिआ हउ विचि मुआ ॥
उसने अहंकार में जन्म लिया था और अहंकार में ही मर गया है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਦਿਤਾ ਹਉ ਵਿਚਿ ਲਇਆ ॥
हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥
अहंकार में ही उसने किसी को कुछ दिया था और अहंकार में ही किसी से कुछ लिया था।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਖਟਿਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਗਇਆ ॥
हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥
अहंकार में ही मनुष्य ने धन कमाया था और अहंकारवश ही वह गंवा गया था।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਸਚਿਆਰੁ ਕੂੜਿਆਰੁ ॥
हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥
अहंकारवश ही वह सत्यवादी और झूठा बन जाता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਵੀਚਾਰੁ ॥
हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥
अहंकार में ही वह पाप एवं पुण्य का विचार करता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਨਰਕਿ ਸੁਰਗਿ ਅਵਤਾਰੁ ॥
हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥
अहंकार के कारण ही मनुष्य सुख और दुःख दोनों का अनुभव करता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਹਸੈ ਹਉ ਵਿਚਿ ਰੋਵੈ ॥
हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥
अहंकार में ही वह कभी हँसता है और अहंकारवश ही वह कभी रोता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਭਰੀਐ ਹਉ ਵਿਚਿ ਧੋਵੈ ॥
हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥
अहंकार में व्यक्ति का मन कभी विकारों से भर जाता है, तो कभी वह उन्हें दूर करने का प्रयास करता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਜਾਤੀ ਜਿਨਸੀ ਖੋਵੈ ॥
हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥
वह अहंकार में अपनी जाति-पाति भी गंवा लेता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਮੂਰਖੁ ਹਉ ਵਿਚਿ ਸਿਆਣਾ ॥
हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥
अहंकारवश व्यक्ति कभी अज्ञानी, तो कभी बुद्धिमान की तरह आचरण करता है।

ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਾ ॥
मोख मुकति की सार न जाणा ॥
लेकिन वह मोक्ष एवं मुक्ति के सार (रहस्य) को नहीं जानता।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਮਾਇਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਛਾਇਆ ॥
हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥
वह अभिमान में ही माया को सत्य समझता है और अभिमान में ही इसे पेड़ की छाया की तरह झूठी समझता है।

ਹਉਮੈ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜੰਤ ਉਪਾਇਆ ॥
हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥
अहंकारवश ही प्राणी बार-बार योनियों में जन्म लेता है।

ਹਉਮੈ ਬੂਝੈ ਤਾ ਦਰੁ ਸੂਝੈ ॥
हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥
यदि अहंकार दूर हो जाए तभी प्रभु का द्वार सूझता है।

ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣਾ ਕਥਿ ਕਥਿ ਲੂਝੈ ॥
गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥
अन्यथा ज्ञान-विहीन मनुष्य वाद-विवादों में ही उलझा रहता है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੀ ਲਿਖੀਐ ਲੇਖੁ ॥
नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥
हे नानक ! प्रभु के इच्छानुसार मनुष्य के भाग्य का लेख लिखा जाता है।

ਜੇਹਾ ਵੇਖਹਿ ਤੇਹਾ ਵੇਖੁ ॥੧॥
जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥
मनुष्य जैसी विचारधारा रखता है, वैसा ही सत्य को मानने लगता है॥ १ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
श्लोक, द्वितीय गुरुः २॥

ਹਉਮੈ ਏਹਾ ਜਾਤਿ ਹੈ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥
हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥
अहंकार का यह स्वभाव है कि मनुष्य अहंकार में ही कर्म करता है।

ਹਉਮੈ ਏਈ ਬੰਧਨਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਹਿ ॥
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥
यह अहंकार जीव के बंधनों का कारण है, इसलिए जीव बार-बार योनियों में पड़ता है।

ਹਉਮੈ ਕਿਥਹੁ ਊਪਜੈ ਕਿਤੁ ਸੰਜਮਿ ਇਹ ਜਾਇ ॥
हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥
वास्तव में यह अहंकार कहाँ से उत्पन्न होता है और किस युक्ति द्वारा इस पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है?

ਹਉਮੈ ਏਹੋ ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਫਿਰਾਹਿ ॥
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥
ईश्वर की इच्छा से ही अहंकार उत्पन्न होता है, और लोग अपने कर्मों के अनुसार भटकते रहते हैं।

ਹਉਮੈ ਦੀਰਘ ਰੋਗੁ ਹੈ ਦਾਰੂ ਭੀ ਇਸੁ ਮਾਹਿ ॥
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
अहंकार एक दीर्घ रोग है परन्तु इसका उपचार भी शामिल है।

ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਹਿ ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
यदि प्रभु कृपा-दृष्टि करे तो मनुष्य गुरु के शब्द अनुसार कर्म करता है (यही इस रोग का उपचार है)।

ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸੁਣਹੁ ਜਨਹੁ ਇਤੁ ਸੰਜਮਿ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ॥੨॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥
नानक का कथन है कि हे लोगो ! सुनो, संयम द्वारा यह अहंकार दुःख का रोग निवृत्त हो जाता है। ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਸੇਵ ਕੀਤੀ ਸੰਤੋਖੀਈਂ ਜਿਨ੍ਹ੍ਹੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਧਿਆਇਆ ॥
सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥
जिन्होंने एक परम सत्य का ही ध्यान किया है, उन संतोषी व्यक्तियों ने ही परमात्मा की सेवा-भक्ति की है।

ਓਨ੍ਹ੍ਹੀ ਮੰਦੈ ਪੈਰੁ ਨ ਰਖਿਓ ਕਰਿ ਸੁਕ੍ਰਿਤੁ ਧਰਮੁ ਕਮਾਇਆ ॥
ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥
वे कुमार्ग पर अपना पैर नहीं रखते और शुभ कर्म एवं धर्म कमाते हैं।

ਓਨ੍ਹੀ ਦੁਨੀਆ ਤੋੜੇ ਬੰਧਨਾ ਅੰਨੁ ਪਾਣੀ ਥੋੜਾ ਖਾਇਆ ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥
वे दुनिया के बन्धनों को तोड़ देते हैं और अब वे केवल आवश्यकता भर अन्न और जल का सेवन करते हैं।

ਤੂੰ ਬਖਸੀਸੀ ਅਗਲਾ ਨਿਤ ਦੇਵਹਿ ਚੜਹਿ ਸਵਾਇਆ ॥
तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥
हे ईश्वर ! आप ही महान् दाता है, जो निरंतर ही अपने उपहार देते रहते हैं।

ਵਡਿਆਈ ਵਡਾ ਪਾਇਆ ॥੭॥
वडिआई वडा पाइआ ॥७॥
महान् प्रभु की महानता से मनुष्य प्रभु को प्राप्त कर लेता है। ॥ ७ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:॥

ਪੁਰਖਾਂ ਬਿਰਖਾਂ ਤੀਰਥਾਂ ਤਟਾਂ ਮੇਘਾਂ ਖੇਤਾਂਹ ॥
पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥
हे नानक ! पुरुषों, वृक्षों. तीर्थो, तटों, मेघों, खेतों,

ਦੀਪਾਂ ਲੋਆਂ ਮੰਡਲਾਂ ਖੰਡਾਂ ਵਰਭੰਡਾਂਹ ॥
दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥
द्वीपों, लोकों, मृण्डलों, खण्डों-ब्रह्मण्डों,

ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਉਤਭੁਜਾਂ ਖਾਣੀ ਸੇਤਜਾਂਹ ॥
अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥
अंडज, जेरज, स्वेदज एवं उदभिज,

ਸੋ ਮਿਤਿ ਜਾਣੈ ਨਾਨਕਾ ਸਰਾਂ ਮੇਰਾਂ ਜੰਤਾਹ ॥
सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥
सरोवर, पहाड़ों में रहने वाले सब जीवों की गणना परमात्मा ही जानते हैं कि कितनी है।

ਨਾਨਕ ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਕੈ ਸੰਮਾਲੇ ਸਭਨਾਹ ॥
नानक जंत उपाइ कै समाले सभनाह ॥
हे नानक ! भगवान् ही जीवों को पैदा करके उनका भरण-पोषण करते हैं।

ਜਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕਰਣਾ ਕੀਆ ਚਿੰਤਾ ਭਿ ਕਰਣੀ ਤਾਹ ॥
जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥
जिस सृष्टिकर्ता ने सृष्टि-रचना की है वही इसकी चिन्ता एवं देखभाल करते हैं।

ਸੋ ਕਰਤਾ ਚਿੰਤਾ ਕਰੇ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆ ਜਗੁ ॥
सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥
वह सृष्टिकर्ता जिसने जगत् की रचना की है, वह इसकी चिन्ता भी स्वयं ही करते हैं।

ਤਿਸੁ ਜੋਹਾਰੀ ਸੁਅਸਤਿ ਤਿਸੁ ਤਿਸੁ ਦੀਬਾਣੁ ਅਭਗੁ ॥
तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥
वह भगवान् कल्याणकारी है, उसे मेरा शत्-शत् प्रणाम है। उनका दरबार शाश्वत है।

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਆ ਟਿਕਾ ਕਿਆ ਤਗੁ ॥੧॥
नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥
हे नानक ! सत्य नाम के सिमरन बिना तिलक एवं जनेऊ पहनने का क्या अभिप्राय है॥ १ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:॥

ਲਖ ਨੇਕੀਆ ਚੰਗਿਆਈਆ ਲਖ ਪੁੰਨਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥
लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥
चाहे लाखों ही नेकियाँ, अच्छाइयों, लाखों ही पुण्य स्वीकृत हुए हों, चाहे लाखों ही श्रुतियों में सुरति, लाखों ही ज्ञान-ध्यान एवं पुराणों के पाठ पढ़े हों, तो भी सब व्यर्थ है।

ਲਖ ਤਪ ਉਪਰਿ ਤੀਰਥਾਂ ਸਹਜ ਜੋਗ ਬੇਬਾਣ ॥
लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥
चाहे तीर्थों पर लाखों ही तप किए हों तथा वनों में जाकर सहज योग किया हो,

ਲਖ ਸੂਰਤਣ ਸੰਗਰਾਮ ਰਣ ਮਹਿ ਛੁਟਹਿ ਪਰਾਣ ॥
लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥
चाहे लाखों ही बाहुबल-शूरवीरता संग्राम में दिखाई हो तथा रणभूमि में वीरगति प्राप्त की हो,

ਲਖ ਸੁਰਤੀ ਲਖ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਪੜੀਅਹਿ ਪਾਠ ਪੁਰਾਣ ॥
लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥
चाहे लाखों ही श्रुतियों में सुरति, लाखों ही ज्ञान-ध्यान एवं पुराणों के पाठ पढ़े हों, तो भी सब व्यर्थ है।

ਜਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕਰਣਾ ਕੀਆ ਲਿਖਿਆ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ॥
जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥
चूंकि जिस परमात्मा ने यह जगत् बनाया है, उसने ही जीवों का जन्म-मरण निर्धारित किया है।

ਨਾਨਕ ਮਤੀ ਮਿਥਿਆ ਕਰਮੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥੨॥
नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥२॥
हे नानक ! प्रभु की कृपा ही ऐसी चीज़ है जो किसी को उसके दरबार में स्वीकृति (मोहर) दिला सकती है, शेष सभी चतुर चाल झूठी हैं यानि कि दिखावे, चालाकियाँ, या बाहरी साधन झूठ और व्यर्थ हैं।।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी।

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਤੂੰ ਜਿਨਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਵਰਤਾਇਆ ॥
सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥
हे भगवान् ! एक आप ही सच्चे स्वामी है, जिसने परम सत्य का प्रसार किया हुआ है।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਤਾ ਤਿਨ੍ਹੀ ਸਚੁ ਕਮਾਇਆ ॥
जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥
जिसे आप सत्य की सूझ देते है, वही सत्य को प्राप्त करता है और वह सत्य का कर्म करता है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਸਚੁ ਵਸਾਇਆ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥
जिस जीव को सतगुरु मिल जाते हैं, उसे सत्य की प्राप्ति होती है। सच्चा गुरु उनके हृदय में सत्य को बसा देते हैं।

ਮੂਰਖ ਸਚੁ ਨ ਜਾਣਨ੍ਹੀ ਮਨਮੁਖੀ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥
लेकिन मूर्ख व्यक्ति सत्य को नहीं जानता, मनमुख होने के फलस्वरूप व्यर्थ ही जन्म गंवा लेता है।

ਵਿਚਿ ਦੁਨੀਆ ਕਾਹੇ ਆਇਆ ॥੮॥
विचि दुनीआ काहे आइआ ॥८॥
ऐसे लोग इस दुनिया में क्यों आए हैं।॥ ८॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:॥

ਪੜਿ ਪੜਿ ਗਡੀ ਲਦੀਅਹਿ ਪੜਿ ਪੜਿ ਭਰੀਅਹਿ ਸਾਥ ॥
पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥
चाहे गाड़ियाँ भर-भर कर भी पुस्तकें पढ़ ली जाएँ, पुस्तकों के समस्त समुदाय अध्ययन कर लिए जाएँ।

ਪੜਿ ਪੜਿ ਬੇੜੀ ਪਾਈਐ ਪੜਿ ਪੜਿ ਗਡੀਅਹਿ ਖਾਤ ॥
पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥
चाहे पढ़-पढ़कर पुस्तकें नाव भर ली जाएँ, चाहे पढ़-पढ़कर गड्ढे भर लिए जाएँ।

ਪੜੀਅਹਿ ਜੇਤੇ ਬਰਸ ਬਰਸ ਪੜੀਅਹਿ ਜੇਤੇ ਮਾਸ ॥
पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥
चाहे बरसों तक पढ़ाई की जाए चाहे जितने भी महीने पढ़े जाएँ।

ਪੜੀਐ ਜੇਤੀ ਆਰਜਾ ਪੜੀਅਹਿ ਜੇਤੇ ਸਾਸ ॥
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥
चाहे सारी उम्र पढ़ते रहो, जीवन की सांसें रहने तक पढ़ते रहो।

ਨਾਨਕ ਲੇਖੈ ਇਕ ਗਲ ਹੋਰੁ ਹਉਮੈ ਝਖਣਾ ਝਾਖ ॥੧॥
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥
परन्तु हे नानक ! परमात्मा के दरबार में केवल उसकी भक्ति और नाम-स्मरण ही महत्व रखते हैं, शेष बाकी सब कुछ अहंकार में उलझने जैसा है।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:॥

ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਪੜਿਆ ॥ ਤੇਤਾ ਕੜਿਆ ॥
लिखि लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥
जितना अधिक मनुष्य पढ़ता-लिखता है, उतना अधिक वह दुःख में जलता रहता है।

ਬਹੁ ਤੀਰਥ ਭਵਿਆ ॥ ਤੇਤੋ ਲਵਿਆ ॥
बहु तीरथ भविआ ॥ तेतो लविआ ॥
जितना अधिक वह तीर्थों पर भटकता है,उतना अधिक वह निरर्थक बोलता है।

ਬਹੁ ਭੇਖ ਕੀਆ ਦੇਹੀ ਦੁਖੁ ਦੀਆ ॥
बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥
जितना अधिक मनुष्य धार्मिक वेष धारण करता है, वह उतना ही अधिक शरीर को दुःखी करता है।

ਸਹੁ ਵੇ ਜੀਆ ਅਪਣਾ ਕੀਆ ॥
सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥
हे जीव ! अब तू अपने कर्मों का फल भोग।

ਅੰਨੁ ਨ ਖਾਇਆ ਸਾਦੁ ਗਵਾਇਆ ॥
अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥
जो मनुष्य अन्न नहीं खाता, वह जीवन का स्वाद गंवा लेता है।

ਬਹੁ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਦੂਜਾ ਭਾਇਆ ॥
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥
द्वैतभाव में पड़कर मनुष्य बहुत दुःखी होता है।

ਬਸਤ੍ਰ ਨ ਪਹਿਰੈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਕਹਰੈ ॥
बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥
जो वस्त्र नहीं पहनता,वह दिन-रात दुःखी होता है।

ਮੋਨਿ ਵਿਗੂਤਾ ॥ ਕਿਉ ਜਾਗੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਸੂਤਾ ॥
मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥
मौन धारण करने से मनुष्य नष्ट हो जाता है। गुरु के बिना मोह-माया में सोया हुआ कैसे जाग सकता है।

ਪਗ ਉਪੇਤਾਣਾ ॥ ਅਪਣਾ ਕੀਆ ਕਮਾਣਾ ॥
पग उपेताणा ॥ अपणा कीआ कमाणा ॥
जो मनुष्य नंगे पैर चलता है, वह अपने कर्मों का फल भोगता है।

ਅਲੁ ਮਲੁ ਖਾਈ ਸਿਰਿ ਛਾਈ ਪਾਈ ॥
अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥
जो मनुष्य अभक्ष्य गंदगी खाता है और सिर पर राख डलवाता है,

ਮੂਰਖਿ ਅੰਧੈ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥
मूरखि अंधै पति गवाई ॥
वह मूर्ख अन्धा अपना मान-सम्मान गंवा लेता है।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕਿਛੁ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥
विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥
सत्य नाम के बिना कोई भी वस्तु स्वीकृत नहीं होती।

ਰਹੈ ਬੇਬਾਣੀ ਮੜੀ ਮਸਾਣੀ ॥
रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥
वह जंगलों, कब्रिस्तान एवं श्मशान घाट में रहता है।

ਅੰਧੁ ਨ ਜਾਣੈ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਣੀ ॥
अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥
आध्यात्मिक रूप से अन्धा मनुष्य प्रभु को नहीं जानता एवं तत्पश्चात् पश्चाताप करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਸੋ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥
केवल वहीं जिन्हें सतगुरु मिलते हैं, उन्हें सुख प्राप्त होता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
हरि का नामु मंनि वसाए ॥
और हरि का नाम वह अपने मन में बसा लेते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ॥
नानक नदरि करे सो पाए ॥
हे नानक ! प्रभु की कृपा-दृष्टि से सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

ਆਸ ਅੰਦੇਸੇ ਤੇ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥੨॥
आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥२॥
गुरु के वचनों का श्रद्धापूर्वक पालन करते हुए वह शिष्य, आशा और चिंता से परे होकर, अपने अंतःकरण में जमे अहंकार को भस्म कर देता है। ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਭਗਤ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵਦੇ ਦਰਿ ਸੋਹਨਿ ਕੀਰਤਿ ਗਾਵਦੇ ॥
भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥
हे प्रभु ! आपके मन को भक्त बहुत प्यारे लगते हैं, जो आपके द्वार पर भजन-कीर्तन गाते हुए बहुत सुन्दर लगते हैं।

ਨਾਨਕ ਕਰਮਾ ਬਾਹਰੇ ਦਰਿ ਢੋਅ ਨ ਲਹਨੀ ਧਾਵਦੇ ॥
नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ॥
हे नानक ! भाग्यहीन लोगों को प्रभु की कृपा-दृष्टि के बिना उसके दर पर शरण नहीं मिलती और वे भटकते रहते हैं।

ਇਕਿ ਮੂਲੁ ਨ ਬੁਝਨਿ ਆਪਣਾ ਅਣਹੋਦਾ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦੇ ॥
इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥
कुछ लोग अपने मूल (प्रभु) को नहीं पहचानते और व्यर्थ ही अपना अहंकार दिखाते हैं।

ਹਉ ਢਾਢੀ ਕਾ ਨੀਚ ਜਾਤਿ ਹੋਰਿ ਉਤਮ ਜਾਤਿ ਸਦਾਇਦੇ ॥
हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥
हे प्रभु! औरों को अपने कुल और पद का गर्व है, मैं तो बस निम्न वर्ग से उत्पन्न एक तुच्छ कलाकार हूँ ।

ਤਿਨ੍ ਮੰਗਾ ਜਿ ਤੁਝੈ ਧਿਆਇਦੇ ॥੯॥
तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ॥९॥
हे प्रभु! मैं केवल उनकी संगति माँगता हूँ, जो आपका ध्यान-मनन करते हैं।॥ ६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਕੂੜੁ ਰਾਜਾ ਕੂੜੁ ਪਰਜਾ ਕੂੜੁ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥
राजा झूठ है, प्रजा झूठ है यह सारा संसार ही झूठ है,

ਕੂੜੁ ਮੰਡਪ ਕੂੜੁ ਮਾੜੀ ਕੂੜੁ ਬੈਸਣਹਾਰੁ ॥
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥
राजाओं के मंडप और महल झूठ एवं छल ही हैं,

ਕੂੜੁ ਸੁਇਨਾ ਕੂੜੁ ਰੁਪਾ ਕੂੜੁ ਪੈਨ੍ਹਣਹਾਰੁ ॥
कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥
सोना-चांदी झूठा है और इसे पहनने वाला कपट ही है।

ਕੂੜੁ ਕਾਇਆ ਕੂੜੁ ਕਪੜੁ ਕੂੜੁ ਰੂਪੁ ਅਪਾਰੁ ॥
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥
यह काया, वस्त्र एवं अपार रूप सभी झूठे हैं।

ਕੂੜੁ ਮੀਆ ਕੂੜੁ ਬੀਬੀ ਖਪਿ ਹੋਏ ਖਾਰੁ ॥
कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥
पति और पत्नी झूठ रूप ही है, क्योंकि दोनों ही वासनाओं में फंसकर क्षीण होते हैं।

ਕੂੜਿ ਕੂੜੈ ਨੇਹੁ ਲਗਾ ਵਿਸਰਿਆ ਕਰਤਾਰੁ ॥
कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥
झूठा मनुष्य झूठ से प्रेम करता है और करतार प्रभु को विस्मृत कर देता है।

ਕਿਸੁ ਨਾਲਿ ਕੀਚੈ ਦੋਸਤੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਚਲਣਹਾਰੁ ॥
किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥
मैं किसके साथ दोस्ती करूं ? क्योंकि यह संसार नाशवान है।

ਕੂੜੁ ਮਿਠਾ ਕੂੜੁ ਮਾਖਿਉ ਕੂੜੁ ਡੋਬੇ ਪੂਰੁ ॥
कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥
यह मायावी संसार मनुष्यों को शहद के समान मधुर प्रतीत होता है; परंतु इसी मोह-माया की मिथ्या मधुरता अनगिनत आत्माओं का विनाश कर रही है।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਬੇਨਤੀ ਤੁਧੁ ਬਾਝੁ ਕੂੜੋ ਕੂੜੁ ॥੧॥
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥१॥
नानक प्रभु के समक्ष प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे परम-सत्य ! आपके बिना यह सारा संसार झूठा ही है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਰਿਦੈ ਸਚਾ ਹੋਇ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥
सत्य तो तभी जाना जाता है यदि सत्य मनुष्य के हृदय में हो।

ਕੂੜ ਕੀ ਮਲੁ ਉਤਰੈ ਤਨੁ ਕਰੇ ਹਛਾ ਧੋਇ ॥
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥
उसकी झूठ की मैल उतर जाती है और वह अपने तन को शुद्ध कर लेता है।

ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਸਚਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥
कोई सत्य को तभी जान पाता है जब उसे गुरु से सच्ची शिक्षा मिलती है।

ਨਾਉ ਸੁਣਿ ਮਨੁ ਰਹਸੀਐ ਤਾ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥
जब प्रभु नाम को सुनकर मन प्रसन्न हो जाता है तो जीव मोक्ष द्वार प्राप्त कर लेता है।

ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਜੁਗਤਿ ਜਾਣੈ ਜੀਉ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥
सत्य का बोध तभी होता है यदि मनुष्य प्रभु-मिलन की युक्ति समझ लेता है।

ਧਰਤਿ ਕਾਇਆ ਸਾਧਿ ਕੈ ਵਿਚਿ ਦੇਇ ਕਰਤਾ ਬੀਉ ॥
धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥
शरीर रूपी धरती को संवार कर वह इसमें कर्ता प्रभु के नाम का बीज बो देता है।

ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਸਿਖ ਸਚੀ ਲੇਇ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥
सत्य तो ही जाना जा सकता है, जब वह सच्ची शिक्षा प्राप्त करता है।

ਦਇਆ ਜਾਣੈ ਜੀਅ ਕੀ ਕਿਛੁ ਪੁੰਨੁ ਦਾਨੁ ਕਰੇਇ ॥
दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥
वह जीवों पर दया करता है ओर यथाशक्ति अनुसार दान-पुण्य करता है।

ਸਚੁ ਤਾਂ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਆਤਮ ਤੀਰਥਿ ਕਰੇ ਨਿਵਾਸੁ ॥
सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥
सत्य तो ही जाना जा सकता है, जब वह अपनी आत्मा के तीर्थ-स्थान में निवास करता हो।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਨੋ ਪੁਛਿ ਕੈ ਬਹਿ ਰਹੈ ਕਰੇ ਨਿਵਾਸੁ ॥
सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥
वह सतगुरु से पूछकर, उपदेश प्राप्त करके, बैठता एवं निवास करता है।

ਸਚੁ ਸਭਨਾ ਹੋਇ ਦਾਰੂ ਪਾਪ ਕਢੈ ਧੋਇ ॥
सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥
सत्य सबके लिए एक औषधि है, यह पाप को बाहर निकाल दूर कर देता है।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਬੇਨਤੀ ਜਿਨ ਸਚੁ ਪਲੈ ਹੋਇ ॥੨॥
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥
नानक उनके समक्ष विनती करते हैं, जिनके दामन में सत्य विद्यमान है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी ॥

ਦਾਨੁ ਮਹਿੰਡਾ ਤਲੀ ਖਾਕੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤ ਮਸਤਕਿ ਲਾਈਐ ॥
दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥
मेरा मन संतों की चरण-धूल का दान मांगता है,यदि यह मिल जाए तो मैं इसे अपने मस्तक पर लगाऊँ।

ਕੂੜਾ ਲਾਲਚੁ ਛਡੀਐ ਹੋਇ ਇਕ ਮਨਿ ਅਲਖੁ ਧਿਆਈਐ ॥
कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥
झूठा लालच छोड़कर हमें एक मन होकर भगवान् का ध्यान करना चाहिए।

ਫਲੁ ਤੇਵੇਹੋ ਪਾਈਐ ਜੇਵੇਹੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈਐ ॥
फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥
जैसा कर्म हम करते हैं वैसा ही फल हमें प्राप्त होता है।

ਜੇ ਹੋਵੈ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਾ ਧੂੜਿ ਤਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਦੀ ਪਾਈਐ ॥
जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ ॥
यदि प्रारम्भ से ऐसा कर्म लिखा हो तो मनुष्य को संतों की चरणों की धूल प्राप्त हो जाती है।

ਮਤਿ ਥੋੜੀ ਸੇਵ ਗਵਾਈਐ ॥੧੦॥
मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥
अल्पबुद्धि के फलस्वरूप हम सेवा के फल को गंवा लेते हैं॥ १० ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਸਚਿ ਕਾਲੁ ਕੂੜੁ ਵਰਤਿਆ ਕਲਿ ਕਾਲਖ ਬੇਤਾਲ ॥
सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥
धार्मिक जीवन आज के युग में अत्यंत दुर्लभ हो गया है; चारों ओर केवल छल, कपट और असत्य का बोलबाला है। लोग कलयुग के पापों में इतने डूब चुके हैं कि उनका आचरण राक्षसों सा क्रूर और विवेकहीन हो गया है।

ਬੀਉ ਬੀਜਿ ਪਤਿ ਲੈ ਗਏ ਅਬ ਕਿਉ ਉਗਵੈ ਦਾਲਿ ॥
बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥
जिन्होंने प्रभु-नाम का बीज बोया था वह इस संसार से मान-प्रतिष्ठा के साथ गए हैं, परन्तु जिनका चित्त संशय और द्वंद्व के बीच झूलता रहता है, उनके अंतःकरण में धर्म का पवित्र बीज कैसे अंकुरित हो सकता है?

ਜੇ ਇਕੁ ਹੋਇ ਤ ਉਗਵੈ ਰੁਤੀ ਹੂ ਰੁਤਿ ਹੋਇ ॥
जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥
यदि मन द्वैत से मुक्त हो जाए और वह प्रातःकाल की शीतल, शांत और निर्मल वायु की भांति निर्मल हो तो उस शांत वातावरण में ईश्वर-प्रेम का बीज सहज ही अंकुरित हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਪਾਹੈ ਬਾਹਰਾ ਕੋਰੈ ਰੰਗੁ ਨ ਸੋਇ ॥
नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥
हे नानक ! जैसे बिना पूर्व उपचार के कच्चे वस्त्र पर कोई रंग नहीं टिकता, वैसे ही बिना आंतरिक शुद्धि और साधना के आत्मा पर ईश्वर-प्रेम का रंग नहीं चढ़ता।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਖੁੰਬਿ ਚੜਾਈਐ ਸਰਮੁ ਪਾਹੁ ਤਨਿ ਹੋਇ ॥
भै विचि खुमबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥
वैसे ही मन को ईश्वर के प्रेम में रंगने के लिए उसका पूर्व-उपचार - कठिन साधना और ईश्वर के प्रति श्रद्धा-युक्त भय का विकास अनिवार्य है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤੀ ਜੇ ਰਪੈ ਕੂੜੈ ਸੋਇ ਨ ਕੋਇ ॥੧॥
नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥१॥
हे नानक ! यदि मनुष्य प्रभु-भक्ति से रंगा जाए तो झूठ इसे निकट भी स्पर्श नहीं कर सकता ॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:१॥

ਲਬੁ ਪਾਪੁ ਦੁਇ ਰਾਜਾ ਮਹਤਾ ਕੂੜੁ ਹੋਆ ਸਿਕਦਾਰੁ ॥
लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥
लोभ एवं पाप दोनों ही राजा तथा मंत्री हैं और झूठ चौधरी बना बैठा है।

ਕਾਮੁ ਨੇਬੁ ਸਦਿ ਪੁਛੀਐ ਬਹਿ ਬਹਿ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥
लोग बैठ कर बुरे दांव पेच सोचते हैं।

ਅੰਧੀ ਰਯਤਿ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੀ ਭਾਹਿ ਭਰੇ ਮੁਰਦਾਰੁ ॥
अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥
उनकी प्रजा ज्ञान के अभाव में अज्ञान के अंधकार में डूबी हुई है, सांसारिक कामनाओं की ज्वाला से जलती हुई आध्यात्मिक दृष्टि से मृत समान हो गई है।

ਗਿਆਨੀ ਨਚਹਿ ਵਾਜੇ ਵਾਵਹਿ ਰੂਪ ਕਰਹਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥
गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥
ज्ञानी नृत्य करते हैं, बाजे बजाते और अनेक प्रकार के रूप धारण करके श्रृंगार करते हैं।

ਊਚੇ ਕੂਕਹਿ ਵਾਦਾ ਗਾਵਹਿ ਜੋਧਾ ਕਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥
ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥
वे ऊँची आवाज़ में पुकारते हैं एवं युद्ध काव्य एवं शूरवीरों की शूरवीरता की कहानियाँ गाते हैं।

ਮੂਰਖ ਪੰਡਿਤ ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਜਤਿ ਸੰਜੈ ਕਰਹਿ ਪਿਆਰੁ ॥
मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥
मूर्ख पण्डित अपनी चतुराई एवं युक्तियों द्वारा धन-संग्रह करता है, उसका केवल धन से ही प्रेम है।

ਧਰਮੀ ਧਰਮੁ ਕਰਹਿ ਗਾਵਾਵਹਿ ਮੰਗਹਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥
धर्मी लोग धर्म का कर्म करते हैं और मोक्ष की माँग करते हैं।

ਜਤੀ ਸਦਾਵਹਿ ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਣਹਿ ਛਡਿ ਬਹਹਿ ਘਰ ਬਾਰੁ ॥
जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥
वे स्वयं को ब्रह्मचारी कहकर घर-परिवार का त्याग कर लेते हैं, परंतु जीवन के वास्तविक मार्ग को न जानते हुए, केवल रूप मात्र का अनुसरण कर रहे हैं।

ਸਭੁ ਕੋ ਪੂਰਾ ਆਪੇ ਹੋਵੈ ਘਟਿ ਨ ਕੋਈ ਆਖੈ ॥
सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥
सभी अपने आप को पूर्ण भक्त सिद्ध करते है कोई स्वयं को अपूर्ण नहीं समझता

ਪਤਿ ਪਰਵਾਣਾ ਪਿਛੈ ਪਾਈਐ ਤਾ ਨਾਨਕ ਤੋਲਿਆ ਜਾਪੈ ॥੨॥
पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥
हे नानक ! किसी व्यक्ति की वास्तविक योग्यता तभी परखी जा सकेगी, जब उसका मूल्यांकन भगवान के दरबार में प्राप्त सम्मान और कृपा के आधार पर किया जाएगा। २॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा: १॥

ਵਦੀ ਸੁ ਵਜਗਿ ਨਾਨਕਾ ਸਚਾ ਵੇਖੈ ਸੋਇ ॥
वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥
हे नानक ! बुराई भली प्रकार उजागर हो जाती है क्योंकि वह सत्य-परमशेवर सब कुछ देखता है।

ਸਭਨੀ ਛਾਲਾ ਮਾਰੀਆ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥
सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥
सभी अपने इच्छानुसार कार्य करने का प्रयास करते हैं, पर अंततः होता वही है जो विधि में लिखा होता है।

ਅਗੈ ਜਾਤਿ ਨ ਜੋਰੁ ਹੈ ਅਗੈ ਜੀਉ ਨਵੇ ॥
अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥
परलोक में जाति एवं बाहुबल का कोई मूल्य नहीं क्योंकि वहाँ तो जीव नवीन होते हैं।

ਜਿਨ ਕੀ ਲੇਖੈ ਪਤਿ ਪਵੈ ਚੰਗੇ ਸੇਈ ਕੇਇ ॥੩॥
जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥३॥
जिन्हें कर्मो का लेखा-जोखा होने पर सम्मान प्राप्त होता है, वही भले कहे जा सकते हैं। ३ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਧੁਰਿ ਕਰਮੁ ਜਿਨਾ ਕਉ ਤੁਧੁ ਪਾਇਆ ਤਾ ਤਿਨੀ ਖਸਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥
हे विधाता ! आपने आरम्भ से ही जिन जीवों का अच्छा भाग्य लिख दिया है तो ही उन्होंने अपने मालिक-प्रभु को याद किया है।

ਏਨਾ ਜੰਤਾ ਕੈ ਵਸਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਤੁਧੁ ਵੇਕੀ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥
एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥
इन जीवों के वश में कुछ भी नहीं, यह विभिन्न प्रकार का जगत आपने ही उत्पन्न किया है।

ਇਕਨਾ ਨੋ ਤੂੰ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਇਕਿ ਆਪਹੁ ਤੁਧੁ ਖੁਆਇਆ ॥
इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥
हे प्रभु ! कुछ जीवों को आप अपने साथ मिला लेता है और कुछ जीवों को स्वयं ही दूर करके भ्रमित कर देते हो।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਜਾਣਿਆ ਜਿਥੈ ਤੁਧੁ ਆਪੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥
गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥
जहाँ आपने स्वयं ही किसी को अपनी सूझ प्रदान की है, गुरु की कृपा से उसने ही आपको जाना है

ਸਹਜੇ ਹੀ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧੧॥
सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥
और वह सहज ही सत्य में समा गया है॥ ११॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा: १॥

ਦੁਖੁ ਦਾਰੂ ਸੁਖੁ ਰੋਗੁ ਭਇਆ ਜਾ ਸੁਖੁ ਤਾਮਿ ਨ ਹੋਈ ॥
दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥
दुःख औषधि है और सुख रोग है, क्योंकि जब सुख मिल जाता है तो जीव को प्रभु-स्मरण ही नहीं होता।

ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਕਰਣਾ ਮੈ ਨਾਹੀ ਜਾ ਹਉ ਕਰੀ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥
तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥
हे प्रभु ! आप सृष्टि रचयिता है, मैं कुछ भी नहीं कर सकता। यदि मैं कुछ करने का प्रयास भी करूं तो भी कुछ नहीं होता।॥ १॥

ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਵਸਿਆ ॥
बलिहारी कुदरति वसिआ ॥
हे जगत्-रचयिता ! मैं स्वयं को आपके प्रति समर्पित करता हूं।

ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥
और तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾਤਿ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਮਹਿ ਜਾਤਾ ਅਕਲ ਕਲਾ ਭਰਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ॥
जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥
हे प्रभु ! आपका प्रकाश ब्रह्मांड में व्याप्त है, और आप सभी प्राणियों में प्रकाश रूप में निहित हैं। आपकी सर्वशक्तिमान शक्ति सबमें समाई है।

ਤੂੰ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਫਤਿ ਸੁਆਲ੍ਹਿਉ ਜਿਨਿ ਕੀਤੀ ਸੋ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥
तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥
आपकी महिमा अत्यंत सुन्दर है, जो आपकी स्तुति करता है, वह संसार सागर से पार हो जाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੀਆ ਬਾਤਾ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ॥੨॥
कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥
हे नानक ! यह तो जगत्-रचयिता की ही सब लीला है, जो कुछ प्रभु ने करना है, उसे वह किए जा रहा है॥ २॥

ਮਃ ੨ ॥
मः २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २ ॥

ਜੋਗ ਸਬਦੰ ਗਿਆਨ ਸਬਦੰ ਬੇਦ ਸਬਦੰ ਬ੍ਰਾਹਮਣਹ ॥
जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥
योगियों का धर्म ज्ञान प्राप्त करना है और ब्राह्मण का धर्म वेदों का अध्ययन करना है।

ਖਤ੍ਰੀ ਸਬਦੰ ਸੂਰ ਸਬਦੰ ਸੂਦ੍ਰ ਸਬਦੰ ਪਰਾ ਕ੍ਰਿਤਹ ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
क्षत्रियों का धर्म शूरवीरता के कार्य करना है और शूद्रों का धर्म दूसरों की सेवा करना है।

ਸਰਬ ਸਬਦੰ ਏਕ ਸਬਦੰ ਜੇ ਕੋ ਜਾਣੈ ਭੇਉ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਸੋਈ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਉ ॥੩॥
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥
परन्तु सभी का धर्म एक ईश्वर का सिमरन करना है यदि कोई इस रहस्य को जानता है तो नानक उसका दास है और वह पुरुष स्वयं ही निरंजन प्रभु है॥ ३॥

ਮਃ ੨ ॥
मः २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २॥

ਏਕ ਕ੍ਰਿਸਨੰ ਸਰਬ ਦੇਵਾ ਦੇਵ ਦੇਵਾ ਤ ਆਤਮਾ ॥
एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥
एक कृष्ण ही सभी देवताओं के देव हैं। वह सभी देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव में सर्वोच्च आत्मा है।

ਆਤਮਾ ਬਾਸੁਦੇਵਸ੍ਯਿ ਜੇ ਕੋ ਜਾਣੈ ਭੇਉ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਸੋਈ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਉ ॥੪॥
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥४॥
जो उस रहस्य को समझता है कि आत्मा स्वयं ईश्वर है, वह निष्कलंक ईश्वर का अवतार है, और नानक उसी का सेवक है।॥ ४॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा: १॥

ਕੁੰਭੇ ਬਧਾ ਜਲੁ ਰਹੈ ਜਲ ਬਿਨੁ ਕੁੰਭੁ ਨ ਹੋਇ ॥
कुमभे बधा जलु रहै जल बिनु कुमभु न होइ ॥
जैसे घड़े में बंधा हुआ जल टिका रहता है वैसे ही जल के बिना घड़ा भी नहीं बन सकता।

ਗਿਆਨ ਕਾ ਬਧਾ ਮਨੁ ਰਹੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਇ ॥੫॥
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥
इसी प्रकार दिव्य ज्ञान गुरु की शिक्षा के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। ५॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਪੜਿਆ ਹੋਵੈ ਗੁਨਹਗਾਰੁ ਤਾ ਓਮੀ ਸਾਧੁ ਨ ਮਾਰੀਐ ॥
पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥
यदि कोई शिक्षित व्यक्ति पाप करता है, तो उसे दंडित किया जाना अनिवार्य है; किंतु एक पुण्यात्मा, चाहे वह अनपढ़ ही क्यों न हो, उसे दंडित नहीं किया जा सकता।

ਜੇਹਾ ਘਾਲੇ ਘਾਲਣਾ ਤੇਵੇਹੋ ਨਾਉ ਪਚਾਰੀਐ ॥
जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥
मनुष्य जैसे कर्म करता है, वैसा ही उसका नाम दुनिया में गूंजता है।

ਐਸੀ ਕਲਾ ਨ ਖੇਡੀਐ ਜਿਤੁ ਦਰਗਹ ਗਇਆ ਹਾਰੀਐ ॥
ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥
हमें का जीवन ऐसा खेल नहीं खेलना चाहिए, जिसके फलस्वरूप प्रभु के दरबार में पहुँचने पर हारना पड़े।

ਪੜਿਆ ਅਤੈ ਓਮੀਆ ਵੀਚਾਰੁ ਅਗੈ ਵੀਚਾਰੀਐ ॥
पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥
विद्वान एवं अनपढ़ के कर्मों का लेखा-जोखा परलोक में होगा,

ਮੁਹਿ ਚਲੈ ਸੁ ਅਗੈ ਮਾਰੀਐ ॥੧੨॥
मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य को परलोक में कर्मों का दण्ड अवश्य मिलता है॥ १२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा: १॥

ਨਾਨਕ ਮੇਰੁ ਸਰੀਰ ਕਾ ਇਕੁ ਰਥੁ ਇਕੁ ਰਥਵਾਹੁ ॥
नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥
हे नानक ! चौरासी लाख योनियों में सुमेरु पर्वत समान मानव-शरीर सर्वोच्च है। इस शरीर का एक रथ एवं एक रथवान है।

ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਫੇਰਿ ਵਟਾਈਅਹਿ ਗਿਆਨੀ ਬੁਝਹਿ ਤਾਹਿ ॥
जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥
युग-युग के पश्चात् ये बदलते रहते हैं और ज्ञानी पुरुष ही इस भेद को समझते हैं।

ਸਤਜੁਗਿ ਰਥੁ ਸੰਤੋਖ ਕਾ ਧਰਮੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥
सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥
सतयुग में मानव-शरीर का रथ संतोष का था और धर्म रथवान था।

ਤ੍ਰੇਤੈ ਰਥੁ ਜਤੈ ਕਾ ਜੋਰੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥
त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥
त्रैता युग में (मानव-शरीर का) ब्रह्मचर्य रथ था और इच्छाशक्ति सारथी थी।

ਦੁਆਪੁਰਿ ਰਥੁ ਤਪੈ ਕਾ ਸਤੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥
दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥
द्वापर युग में (मानव-शरीर का) रथ तपस्या का था और सत्य रथवान था।

ਕਲਜੁਗਿ ਰਥੁ ਅਗਨਿ ਕਾ ਕੂੜੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥੧॥
कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥
कलियुग में (मानव शरीर का) रथ तृष्णा रूपी अग्नि का रथ है और झूठ इसका रथवान है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा: १॥

ਸਾਮ ਕਹੈ ਸੇਤੰਬਰੁ ਸੁਆਮੀ ਸਚ ਮਹਿ ਆਛੈ ਸਾਚਿ ਰਹੇ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥
साम कहै सेत्मबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥
सामवेद कहता है कि जगत् के स्वामी प्रभु श्वेत-वस्त्रों वाले है। सतयुग में प्रत्येक मनुष्य सत्य को चाहता था, सत्य में विचरता था और सत्य में ही समा जाता था।

ਰਿਗੁ ਕਹੈ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਦੇਵਾ ਮਹਿ ਸੂਰੁ ॥
रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥
ऋग्वेद कहता है कि प्रभु सर्वव्यापक है और सभी देवताओं में परमात्मा का राम नाम सर्वश्रेष्ठ है।

ਨਾਇ ਲਇਐ ਪਰਾਛਤ ਜਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਉ ਮੋਖੰਤਰੁ ਪਾਹਿ ॥
नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥ नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥
हे नानक ! राम नाम के सिमरन द्वारा प्रायश्चित हो जाता है अर्थात् पाप निवृत हो जाते हैं। राम नाम लेने से ही मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

ਜੁਜ ਮਹਿ ਜੋਰਿ ਛਲੀ ਚੰਦ੍ਰਾਵਲਿ ਕਾਨ੍ ਕ੍ਰਿਸਨੁ ਜਾਦਮੁ ਭਇਆ ॥
जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥
यजुर्वेद के समय (द्वापर में) यादव वंश के कृष्ण-कन्हैया हुए, जिन्होंने अपने बाहुबल से चंद्रावलि को छल लिया था।

ਪਾਰਜਾਤੁ ਗੋਪੀ ਲੈ ਆਇਆ ਬਿੰਦ੍ਰਾਬਨ ਮਹਿ ਰੰਗੁ ਕੀਆ ॥
पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥
श्रीकृष्ण अपनी गोपी (सत्यभामा) हेतु इन्द्र के उद्यान से पारिजात (कल्पवृक्ष) ले आए थे और वृन्दावन में कौतुक रचे तथा आनंद मनाते रहे।

ਕਲਿ ਮਹਿ ਬੇਦੁ ਅਥਰਬਣੁ ਹੂਆ ਨਾਉ ਖੁਦਾਈ ਅਲਹੁ ਭਇਆ ॥
कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥
कलयुग में अथर्ववेद प्रसिद्ध हुआ तथा उसके अनुसार प्रभु का नाम 'अल्लाह एवं 'खुदा' विख्यात हो गया।

ਨੀਲ ਬਸਤ੍ਰ ਲੇ ਕਪੜੇ ਪਹਿਰੇ ਤੁਰਕ ਪਠਾਣੀ ਅਮਲੁ ਕੀਆ ॥
नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥
लोगों ने नीले रंग के वस्त्र पहने तथा तुर्कों एवं मुगलों का शासन हो गया।

ਚਾਰੇ ਵੇਦ ਹੋਏ ਸਚਿਆਰ ॥
चारे वेद होए सचिआर ॥
इस तरह चारों वेद-सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद सच्चे कहे गए।

ਪੜਹਿ ਗੁਣਹਿ ਤਿਨ੍ ਚਾਰ ਵੀਚਾਰ ॥
पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥
उनको पढ़ने एवं अध्ययन करने से मनुष्य उनमें चार सिद्धांत प्राप्त करता है।

ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਨੀਚੁ ਸਦਾਏ ॥ ਤਉ ਨਾਨਕ ਮੋਖੰਤਰੁ ਪਾਏ ॥੨॥
भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥
हे नानक ! यदि मनुष्य प्रभु की भक्ति करके अपने आपको विनीत कहलवाए तो ही वह मोक्ष प्राप्त करता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਖਸਮੁ ਸਮਾਲਿਆ ॥
सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥
मैं अपने सतगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिनके मिलन से भगवान् का सिमरन किया है।

ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਦੀਆ ਇਨ੍ਹੀ ਨੇਤ੍ਰੀ ਜਗਤੁ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥
जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥
जिसने मुझे उपदेश देकर ज्ञान का सुरमा प्रदान किया है और इन नेत्रों से मैंने जगत के सत्य को देख लिया है।

ਖਸਮੁ ਛੋਡਿ ਦੂਜੈ ਲਗੇ ਡੁਬੇ ਸੇ ਵਣਜਾਰਿਆ ॥
खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥
जो व्यापारी (प्राणी) अपने प्रभु-पति को त्यागकर द्वैतवाद में लीन हुए, वे डूब गए हैं।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਹੈ ਬੋਹਿਥਾ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਵੀਚਾਰਿਆ ॥
सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥
सतगुरु संसार-सागर में से पार करवाने वाला एक जहाज है, कुछ विरले पुरुष ही इसे अनुभव करते है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿਆ ॥੧੩॥
करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥
अपनी कृपा करके वह उनको संसार-सागर से पार कर देते हैं।॥ १३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा: १॥

ਸਿੰਮਲ ਰੁਖੁ ਸਰਾਇਰਾ ਅਤਿ ਦੀਰਘ ਅਤਿ ਮੁਚੁ ॥
सिमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥
सेमल का वृक्ष बड़ा सीधा, अत्यंत ऊँचा एवं बहुत मोटा होता है।

ਓਇ ਜਿ ਆਵਹਿ ਆਸ ਕਰਿ ਜਾਹਿ ਨਿਰਾਸੇ ਕਿਤੁ ॥
ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥
कितने ही पक्षी उसका फल खाने की आशा करके इसके पास आते हैं परन्तु निराश होकर चले जाते हैं।

ਫਲ ਫਿਕੇ ਫੁਲ ਬਕਬਕੇ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵਹਿ ਪਤ ॥
फल फिके फुल बकबके कमि न आवहि पत ॥
चूंकि इसके फल बहुत फीके, फूल बकबके एवं पते किसी काम के नहीं होते।

ਮਿਠਤੁ ਨੀਵੀ ਨਾਨਕਾ ਗੁਣ ਚੰਗਿਆਈਆ ਤਤੁ ॥
मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥
हे नानक ! नम्रता बड़ी मीठी होती है और यह सब गुणों एवं अच्छाइयों का निचोड़ है अर्थात् सर्वोत्तम गुण है।

ਸਭੁ ਕੋ ਨਿਵੈ ਆਪ ਕਉ ਪਰ ਕਉ ਨਿਵੈ ਨ ਕੋਇ ॥
सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥
प्रत्येक मनुष्य अपने स्वार्थ हेतु झुकता है परन्तु दूसरों की भलाई हेतु कोई नहीं झुकता।

ਧਰਿ ਤਾਰਾਜੂ ਤੋਲੀਐ ਨਿਵੈ ਸੁ ਗਉਰਾ ਹੋਇ ॥
धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥
यदि कोई वस्तु तराजू पर रख कर तौली जाए तो तराजू का जो पलड़ा झुकता है, वही भारी होता है।

ਅਪਰਾਧੀ ਦੂਣਾ ਨਿਵੈ ਜੋ ਹੰਤਾ ਮਿਰਗਾਹਿ ॥
अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥
मृग के शिकारी की भाँति अपराधी दुगुना झुकता है परन्तु

ਸੀਸਿ ਨਿਵਾਇਐ ਕਿਆ ਥੀਐ ਜਾ ਰਿਦੈ ਕੁਸੁਧੇ ਜਾਹਿ ॥੧॥
सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥
सिर झुकाने से क्या प्राप्त हो सकता है जब मनुष्य हृदय से ही मैला हो जाता है।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु द्वारा: १॥

ਪੜਿ ਪੁਸਤਕ ਸੰਧਿਆ ਬਾਦੰ ॥
पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥
पण्डित (वेद इत्यादि धार्मिक ग्रंथ) पुस्तकें पढ़ता है, सन्ध्या-वन्दन एवं वाद-विवाद करता है।

ਸਿਲ ਪੂਜਸਿ ਬਗੁਲ ਸਮਾਧੰ ॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥
वह पत्थरों की पूजा करता है और बगुलों की भाँति समाधि लगाता है।

ਮੁਖਿ ਝੂਠ ਬਿਭੂਖਣ ਸਾਰੰ ॥
मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥
वह अपने मुख से झूठ बोलता है और सुन्दर आभूषणों की तरह दिखाता है।

ਤ੍ਰੈਪਾਲ ਤਿਹਾਲ ਬਿਚਾਰੰ ॥
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥
वह दिन में तीन बार गायत्री मंत्र का पाठ करता है।

ਗਲਿ ਮਾਲਾ ਤਿਲਕੁ ਲਿਲਾਟੰ ॥
गलि माला तिलकु लिलाटं ॥
गले में माला और माथे पर तिलक धारण करता है।

ਦੁਇ ਧੋਤੀ ਬਸਤ੍ਰ ਕਪਾਟੰ ॥
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
दुहरी धोती पहनता और सिर पर वस्त्र भी रखता है।

ਜੇ ਜਾਣਸਿ ਬ੍ਰਹਮੰ ਕਰਮੰ ॥
जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥
परन्तु यदि यह पण्डित ब्रह्म का कर्म जानता हो तो

ਸਭਿ ਫੋਕਟ ਨਿਸਚਉ ਕਰਮੰ ॥
सभि फोकट निसचउ करमं ॥
उसे पता लगेगा कि यह सभी निश्चय कर्म व्यर्थ के आडम्बर हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਿਹਚਉ ਧਿਆਵੈ ॥
कहु नानक निहचउ धिआवै ॥
हे नानक ! श्रद्धा धारण करके भगवान् का ध्यान करना चाहिए।

ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਵਾਟ ਨ ਪਾਵੈ ॥੨॥
विणु सतिगुर वाट न पावै ॥२॥
सतगुरु के मार्गदर्शन के बिना नाम-सिमरन का मार्ग नहीं मिलता ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਕਪੜੁ ਰੂਪੁ ਸੁਹਾਵਣਾ ਛਡਿ ਦੁਨੀਆ ਅੰਦਰਿ ਜਾਵਣਾ ॥

कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥

इस शरीर रूपी सुन्दर वस्त्र एवं सौन्दर्य को इस दुनिया में ही छोड़कर जीव ने जाना है।

ਮੰਦਾ ਚੰਗਾ ਆਪਣਾ ਆਪੇ ਹੀ ਕੀਤਾ ਪਾਵਣਾ ॥

मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥

जीव ने स्वयं अपने अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगना है।

ਹੁਕਮ ਕੀਏ ਮਨਿ ਭਾਵਦੇ ਰਾਹਿ ਭੀੜੈ ਅਗੈ ਜਾਵਣਾ ॥

हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥

मनुष्य इहलोक में चाहे मन लुभावने आदेश लागू करता रहे परन्तु परलोक में उसे कठिन मार्ग में से गुजरना होगा।

ਨੰਗਾ ਦੋਜਕਿ ਚਾਲਿਆ ਤਾ ਦਿਸੈ ਖਰਾ ਡਰਾਵਣਾ ॥

नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥

जब उसके पाप उजागर हो जाते हैं, तो वह पीड़ा में कराहता हुआ अत्यंत भयावह प्रतीत होता है।

ਕਰਿ ਅਉਗਣ ਪਛੋਤਾਵਣਾ ॥੧੪॥

करि अउगण पछोतावणा ॥१४॥

वह अपने किए हुए अवगुणों पर पश्चाताप करता है॥ १४ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥

सलोकु मः १ ॥

श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਦਇਆ ਕਪਾਹ ਸੰਤੋਖੁ ਸੂਤੁ ਜਤੁ ਗੰਢੀ ਸਤੁ ਵਟੁ ॥

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥

हे पण्डित ! दया की कपास हो, संतोष का धागा हो, ब्रह्मचर्य की गांठ हो और सत्य द्वारा बल डाला हो,

ਏਹੁ ਜਨੇਊ ਜੀਅ ਕਾ ਹਈ ਤ ਪਾਡੇ ਘਤੁ ॥

एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥

हे पण्डित ! यह ही आत्मा का जनेऊ है, यदि तेरे पास ऐसा जनेऊ है तो मुझे पहना दे।

ਨਾ ਏਹੁ ਤੁਟੈ ਨ ਮਲੁ ਲਗੈ ਨਾ ਏਹੁ ਜਲੈ ਨ ਜਾਇ ॥
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥
ऐसा आत्मा का जनेऊ न ही टूटता है, न इसे मैल लगती है, न ही यह जलता है और न ही यह गुम होता है।

ਧੰਨੁ ਸੁ ਮਾਣਸ ਨਾਨਕਾ ਜੋ ਗਲਿ ਚਲੇ ਪਾਇ ॥
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥
हे नानक ! वह मनुष्य धन्य हैं जिन्होंने ऐसा जनेऊ अपने गले में पहन लिया है।

ਚਉਕੜਿ ਮੁਲਿ ਅਣਾਇਆ ਬਹਿ ਚਉਕੈ ਪਾਇਆ ॥
चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥
हे पण्डित ! यह जनेऊ तो तुमने चार कौड़ियाँ मूल्य देकर मंगवा लिया और विशिष्ट अनुष्ठान पर अपने यजमान के चौके में बैठकर उसके गले में पहना दिया,

ਸਿਖਾ ਕੰਨਿ ਚੜਾਈਆ ਗੁਰੁ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਥਿਆ ॥
सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥
फिर तुम उसे कान में उपदेश देते हो कि आज से तेरा गुरु ब्राह्मण हो गया।

ਓਹੁ ਮੁਆ ਓਹੁ ਝੜਿ ਪਇਆ ਵੇਤਗਾ ਗਇਆ ॥੧॥
ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥
परन्तु कुछ समय उपरांत वह यजमान जब प्राण त्याग देता है तो वह जनेऊ उसके पार्थिव शरीर सहित जल जाता है और आत्मा धागे के बिना ही दुनिया से चली जाती है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:१॥

ਲਖ ਚੋਰੀਆ ਲਖ ਜਾਰੀਆ ਲਖ ਕੂੜੀਆ ਲਖ ਗਾਲਿ ॥
लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥
जीव लाखों ही चोरियाँ, लाखों ही व्यभिचार करता है और लाखों ही झूठ एवं लाखों ही मंदे वचन बोलता है।

ਲਖ ਠਗੀਆ ਪਹਿਨਾਮੀਆ ਰਾਤਿ ਦਿਨਸੁ ਜੀਅ ਨਾਲਿ ॥
लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥
वह दिन-रात लाखों ही ठगियों एवं गोपनीय पाप प्राणों के साथ बनाए रखता है।

ਤਗੁ ਕਪਾਹਹੁ ਕਤੀਐ ਬਾਮ੍ਹਣੁ ਵਟੇ ਆਇ ॥
तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥
कपास को कातकर धागा बनाया जाता है और ब्राह्मण आकर इसे बल देकर पहना देता है।

ਕੁਹਿ ਬਕਰਾ ਰਿੰਨ੍ਹਿ ਖਾਇਆ ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਪਾਇ ॥
कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥
घर आए हुए अतिथियों को बकरा मार कर पकाया एवं खिलाया जाता है। सभी लोग कहते हैं कि जनेऊ पहना दो।

ਹੋਇ ਪੁਰਾਣਾ ਸੁਟੀਐ ਭੀ ਫਿਰਿ ਪਾਈਐ ਹੋਰੁ ॥
होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥
जब जनेऊ पुराना हो जाता है तो इसे फैंककर नया जनेऊ पहना दिया जाता है।

ਨਾਨਕ ਤਗੁ ਨ ਤੁਟਈ ਜੇ ਤਗਿ ਹੋਵੈ ਜੋਰੁ ॥੨॥
नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥२॥
हे नानक ! यदि धागे में दया, संतोष एवं सत्य का बल हो तो आत्मा का यह धागा कभी टूटता नहीं ॥ २ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरुः १॥

ਨਾਇ ਮੰਨਿਐ ਪਤਿ ਊਪਜੈ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ ਸੂਤੁ ॥
नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥
यदि श्रद्धा से प्रभु का नाम-सिमरन किया जाए तो ही सम्मान उत्पन्न होता है।

ਦਰਗਹ ਅੰਦਰਿ ਪਾਈਐ ਤਗੁ ਨ ਤੂਟਸਿ ਪੂਤ ॥੩॥
दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥३॥
प्रभु की गुणस्तुति ही सच्चा जनेऊ है। ऐसा पवित्र धागा प्रभु के दरबार में पहनाया जाता है और यह कभी टूटता नहीं ॥ ३॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरुः १ ॥

ਤਗੁ ਨ ਇੰਦ੍ਰੀ ਤਗੁ ਨ ਨਾਰੀ ॥
तगु न इंद्री तगु न नारी ॥
पंडित स्वयं अपनी इंद्रियों को दुर्गुणों से बचाने के लिए कोई जनेऊ नहीं पहनते, और स्त्री के लिए तो जनेऊ होता ही नहीं।

ਭਲਕੇ ਥੁਕ ਪਵੈ ਨਿਤ ਦਾੜੀ ॥
भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥
हर दिन लोग पाप करते हैं और अपमानित होते हैं।

ਤਗੁ ਨ ਪੈਰੀ ਤਗੁ ਨ ਹਥੀ ॥
तगु न पैरी तगु न हथी ॥
पैरों के लिए कोई धागा नहीं जो मंदे स्थान पर जाते हैं और न ही कोई हाथों के लिए धागा है जो मंदे कर्म करते हैं।

ਤਗੁ ਨ ਜਿਹਵਾ ਤਗੁ ਨ ਅਖੀ ॥
तगु न जिहवा तगु न अखी ॥
धागा जीभ के लिए भी नहीं जो पराई निंदा करती है और न ही नेत्रों के लिए कोई धागा है जो पराया रूप देखते हैं।

ਵੇਤਗਾ ਆਪੇ ਵਤੈ ॥ ਵਟਿ ਧਾਗੇ ਅਵਰਾ ਘਤੈ ॥
वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे अवरा घतै ॥
सत्यता के धागे के बिना ब्राह्मण स्वयं भटकता रहता है। दूसरों को धागे वह लपेट-लपेट कर पहनाता है।

ਲੈ ਭਾੜਿ ਕਰੇ ਵੀਆਹੁ ॥
लै भाड़ि करे वीआहु ॥
विवाह करवाने की वह दक्षिणा लेता है और

ਕਢਿ ਕਾਗਲੁ ਦਸੇ ਰਾਹੁ ॥
कढि कागलु दसे राहु ॥
पत्री निकाल कर वह मार्ग दिखाता है।

ਸੁਣਿ ਵੇਖਹੁ ਲੋਕਾ ਏਹੁ ਵਿਡਾਣੁ ॥
सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥
हे लोगो ! सुनो और देखो, यह कितनी आश्चर्यचकित बात है कि

ਮਨਿ ਅੰਧਾ ਨਾਉ ਸੁਜਾਣੁ ॥੪॥
मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥४॥
आध्यात्मिक रूप से अन्धा होता हुआ भी पण्डित अपना नाम (बुद्धिमान) सुजान कहलवाता है॥४॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਸਾਹਿਬੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਤਾ ਸਾਈ ਕਾਰ ਕਰਾਇਸੀ ॥
साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥
जब प्रभु दयालु होते हैं तो कृपा करके वह जीवों से कर्म करवाते हैं।

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਜਿਸ ਨੋ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਇਸੀ ॥
सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥
वही सेवक उसकी सेवा-भक्ति करता है, जिसे वह आज्ञा का भेद बताकर मनवा लेता है।

ਹੁਕਮਿ ਮੰਨਿਐ ਹੋਵੈ ਪਰਵਾਣੁ ਤਾ ਖਸਮੈ ਕਾ ਮਹਲੁ ਪਾਇਸੀ ॥
हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥
प्रभु का आदेश मानने से मनुष्य स्वीकृत हो जाता है और तब वह सत्य के महल को पा लेता है।

ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ਮਨਹੁ ਚਿੰਦਿਆ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਸੀ ॥
खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥
जो कुछ प्रभु-पति को अच्छा लगता है, वही कुछ वह (पालन) करता है, जब उसकी सेवा सफल हो जाती है तो उसे मनोवांछित फल मिल जाता है।

ਤਾ ਦਰਗਹ ਪੈਧਾ ਜਾਇਸੀ ॥੧੫॥
ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥
वह तब मान-सम्मान सहित प्रभु के दरबार में जाता है॥ १५ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਗਊ ਬਿਰਾਹਮਣ ਕਉ ਕਰੁ ਲਾਵਹੁ ਗੋਬਰਿ ਤਰਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥
हे भाई ! गाय एवं ब्राह्मण पर तो तुम कर लगाते हो। गाय के गोबर ने तुझे मोक्ष प्रदान नहीं करना।

ਧੋਤੀ ਟਿਕਾ ਤੈ ਜਪਮਾਲੀ ਧਾਨੁ ਮਲੇਛਾਂ ਖਾਈ ॥
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥
एक तरफ धोती, तिलक एवं माला धारण करते हो लेकिन दूसरी तरफ मुसलमानों से धन-धान्य खाते हो, जिन्हें मलेच्छ कह कर पुकारते हो।

ਅੰਤਰਿ ਪੂਜਾ ਪੜਹਿ ਕਤੇਬਾ ਸੰਜਮੁ ਤੁਰਕਾ ਭਾਈ ॥
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
हे भाई ! अपने घर के अन्दर तुम पूजा-अर्चना करते हो लेकिन बाहर मुसलमानों से डर कर पाखंड करके कुरान पढ़ते एवं मुसलमानों की भाँति जीवन-आचरण धारण करते हो।

ਛੋਡੀਲੇ ਪਾਖੰਡਾ ॥
छोडीले पाखंडा ॥
हे भाई ! यह पाखण्ड त्याग दो।

ਨਾਮਿ ਲਇਐ ਜਾਹਿ ਤਰੰਦਾ ॥੧॥
नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥
प्रभु का नाम-सिमरन करने से ही तुझे मोक्ष प्राप्त होगा ॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਮਾਣਸ ਖਾਣੇ ਕਰਹਿ ਨਿਵਾਜ ॥
माणस खाणे करहि निवाज ॥
मानव-भक्षी मुसलमान पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ते हैं।

ਛੁਰੀ ਵਗਾਇਨਿ ਤਿਨ ਗਲਿ ਤਾਗ ॥
छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥
दूसरी तरफ अत्याचार की छुरी चलाते हैं, उनके गले में धागा है।

ਤਿਨ ਘਰਿ ਬ੍ਰਹਮਣ ਪੂਰਹਿ ਨਾਦ ॥
तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥
उनके घर में ब्राह्मण शंख बजाते हैं।

ਉਨ੍ਹਾ ਭਿ ਆਵਹਿ ਓਈ ਸਾਦ ॥
उन्हा भि आवहि ओई साद ॥
उनको भी वही स्वाद आता है।

ਕੂੜੀ ਰਾਸਿ ਕੂੜਾ ਵਾਪਾਰੁ ॥
कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥
उनकी पूंजी झूठी है और उनका व्यापार झूठा है।

ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਕਰਹਿ ਆਹਾਰੁ ॥
कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥
झुठ बोलकर वह भोजन ग्रहण करते हैं।

ਸਰਮ ਧਰਮ ਕਾ ਡੇਰਾ ਦੂਰਿ ॥
सरम धरम का डेरा दूरि ॥
लज्जा एवं धर्म का बसेरा उनसे कहीं दूर है।

ਨਾਨਕ ਕੂੜੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥
हे नानक ! झूठ उन सभी को भरपूर कर रहा है।

ਮਥੈ ਟਿਕਾ ਤੇੜਿ ਧੋਤੀ ਕਖਾਈ ॥
मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥
वे माथे पर तिलक लगाते हैं और कमर के साथ भगवा धोती पहनते हैं।

ਹਥਿ ਛੁਰੀ ਜਗਤ ਕਾਸਾਈ ॥
हथि छुरी जगत कासाई ॥
उनके हाथ में छुरी है और जगत् पर कसाइयों की भाँति अत्याचार कर रहे हैं।

ਨੀਲ ਵਸਤ੍ਰ ਪਹਿਰਿ ਹੋਵਹਿ ਪਰਵਾਣੁ ॥
नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥
ब्राह्मण नीले वस्त्र पहन कर मुसलमानों की नज़र में स्वीकृत होना चाहते हैं।

ਮਲੇਛ ਧਾਨੁ ਲੇ ਪੂਜਹਿ ਪੁਰਾਣੁ ॥
मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥
मुसलमानों से धन-धान्य लेते हैं, जिन्हें मलेच्छ कहते हैं और पुराणों की फिर भी पूजा करते हैं।

ਅਭਾਖਿਆ ਕਾ ਕੁਠਾ ਬਕਰਾ ਖਾਣਾ ॥
अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥
एक तरफ अभाषा अरबी-फारसी का कलमा पढ़कर हलाल किया बकरा खाते हैं

ਚਉਕੇ ਉਪਰਿ ਕਿਸੈ ਨ ਜਾਣਾ ॥
चउके उपरि किसै न जाणा ॥
परन्तु दूसरी तरफ अपनी रसोई के भीतर किसी को दाखिल नहीं होने देते।

ਦੇ ਕੈ ਚਉਕਾ ਕਢੀ ਕਾਰ ॥
दे कै चउका कढी कार ॥
वे रसोई की लिपाई करके उसके गिर्द रेखा लगाते हैं और

ਉਪਰਿ ਆਇ ਬੈਠੇ ਕੂੜਿਆਰ ॥
उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥
चौकी रसोई में वे झूठे आकर बैठ जाते हैं।

ਮਤੁ ਭਿਟੈ ਵੇ ਮਤੁ ਭਿਟੈ ॥ ਇਹੁ ਅੰਨੁ ਅਸਾਡਾ ਫਿਟੈ ॥
मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥
दूसरों को वे कहते हैं कि, "रसोई (चौकी) के निकट मत आना, हमारी चौकी को स्पर्श मत करना,अन्यथा हमारा भोजन भ्रष्ट हो जाएगा।"

ਤਨਿ ਫਿਟੈ ਫੇੜ ਕਰੇਨਿ ॥
तनि फिटै फेड़ करेनि ॥
भ्रष्ट मलिन शरीर से वे दुष्कर्म करते हैं।

ਮਨਿ ਜੂਠੈ ਚੁਲੀ ਭਰੇਨਿ ॥
मनि जूठै चुली भरेनि ॥
अपवित्र मन से वे जूठन की चुल्लू करते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਧਿਆਈਐ ॥
कहु नानक सचु धिआईऐ ॥
हे नानक ! सत्य का ध्यान करने से

ਸੁਚਿ ਹੋਵੈ ਤਾ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ॥੨॥
सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥
जब मन शुद्ध हो जाता है तो सत्य (प्रभु) प्राप्त हो जाते हैं॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी ॥

ਚਿਤੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਵੇਖਿ ਨਦਰੀ ਹੇਠਿ ਚਲਾਇਦਾ ॥
चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥
परमात्मा सब जीवों को अपने चित्त में याद रखते हैं और वह सबको देखकर अपनी नज़र में रखकर अपनी इच्छा से चलाते हैं।

ਆਪੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈਆ ਆਪੇ ਹੀ ਕਰਮ ਕਰਾਇਦਾ ॥
आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥
वह स्वयं ही जीवों को प्रशंसा प्रदान करते हैं और उन से कर्म करवाते हैं।

ਵਡਹੁ ਵਡਾ ਵਡ ਮੇਦਨੀ ਸਿਰੇ ਸਿਰਿ ਧੰਧੈ ਲਾਇਦਾ ॥
वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥
वह श्रेष्ठो में श्रेष्ठ हैं;और उसकी सृष्टि भी अनन्त है। वह प्रत्येक को कामकाज में लगाते हैं।

ਨਦਰਿ ਉਪਠੀ ਜੇ ਕਰੇ ਸੁਲਤਾਨਾ ਘਾਹੁ ਕਰਾਇਦਾ ॥
नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥
यदि प्रभु कोप-दृष्टि धारण कर ले तो वह राजाओं-महाराजाओं को भी घास के तृण की तरह कंगाल बना देते हैं।

ਦਰਿ ਮੰਗਨਿ ਭਿਖ ਨ ਪਾਇਦਾ ॥੧੬॥
दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥१६॥
चाहे वे द्वार-द्वार माँगते रहें परन्तु उन्हें भिक्षा नहीं मिलती॥ १६ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरुः १॥

ਜੇ ਮੋਹਾਕਾ ਘਰੁ ਮੁਹੈ ਘਰੁ ਮੁਹਿ ਪਿਤਰੀ ਦੇਇ ॥
जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥
यदि कोई चोर पराया घर लूट ले और पराए घर की लूट पितरों के निमित्त श्राद्ध करे तो

ਅਗੈ ਵਸਤੁ ਸਿਞਾਣੀਐ ਪਿਤਰੀ ਚੋਰ ਕਰੇਇ ॥
अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥
परलोक में वस्तु पहचानी जाती है। इस तरह वह पितरों को चोर बना देती है। (अर्थात् पित्तरों

को दण्ड मिलता और चोरी की वस्तु से पुण्य नहीं मिलता)

ਵਢੀਅਹਿ ਹਥ ਦਲਾਲ ਕੇ ਮੁਸਫੀ ਏਹ ਕਰੇਇ ॥
वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥
प्रभु आगे यह न्याय करता है कि जो ब्राहाण अपने यजमान से वह चोरी की वस्तु पितरों निमित्त दान करवाता है, उस ब्राहाण के हाथ काट दिए जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਅਗੈ ਸੋ ਮਿਲੈ ਜਿ ਖਟੇ ਘਾਲੇ ਦੇਇ ॥੧॥
नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥१॥
हे नानक ! आगे परलोक में केवल यही प्राप्त होता है, जो मनुष्य अपने परिश्रम से कम कर देता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਜਿਉ ਜੋਰੂ ਸਿਰਨਾਵਣੀ ਆਵੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥
जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥
जैसे स्त्री को बार-बार मासिक-धर्म होता है,

ਜੂਠੇ ਜੂਠਾ ਮੁਖਿ ਵਸੈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥
जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥
वैसे झूठे इन्सान के मुँह में झूठ ही बना रहता है। ऐसा मनुष्य सदैव ही दु:खी होता है।

ਸੂਚੇ ਏਹਿ ਨ ਆਖੀਅਹਿ ਬਹਨਿ ਜਿ ਪਿੰਡਾ ਧੋਇ ॥
सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥
ऐसे मनुष्य पवित्र नहीं कहे जाते, जो अपने शरीर को शुद्ध करके बैठ जाते हैं।

ਸੂਚੇ ਸੇਈ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥੨॥
सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥२॥
हे नानक ! पवित्र लोग वही हैं, जिनके मन में प्रभु निवास करते हैं॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी।

ਤੁਰੇ ਪਲਾਣੇ ਪਉਣ ਵੇਗ ਹਰ ਰੰਗੀ ਹਰਮ ਸਵਾਰਿਆ ॥
तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥
जिन लोगों के पास पवन-वेग की तरह तेज चलने वाले सुन्दर काठीधारी घोड़े हैं,

ਕੋਠੇ ਮੰਡਪ ਮਾੜੀਆ ਲਾਇ ਬੈਠੇ ਕਰਿ ਪਾਸਾਰਿਆ ॥
कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥
जिन्होंने अपनी रानियों के रनिवास को हर प्रकार के रंगों से सजाया है, जो मकानों, मंडपों एवं ऊँचे मन्दिरों में रहते हैं और आडम्बर करते रहते हैं।

ਚੀਜ ਕਰਨਿ ਮਨਿ ਭਾਵਦੇ ਹਰਿ ਬੁਝਨਿ ਨਾਹੀ ਹਾਰਿਆ ॥
चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥
जो अपनी मन लुभावनी बातें करते हैं, परन्तु प्रभु को नहीं जानते इसलिए उन्होंने अपने जीवन की बाजी हार दी है।

ਕਰਿ ਫੁਰਮਾਇਸਿ ਖਾਇਆ ਵੇਖਿ ਮਹਲਤਿ ਮਰਣੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥
करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥
जिन व्यक्तियों ने दूसरों पर आदेश चला कर भोजन खाया है और अपने महलों को देखकर मृत्यु को भुला दिया है

ਜਰੁ ਆਈ ਜੋਬਨਿ ਹਾਰਿਆ ॥੧੭॥
जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥
जब उन पर बुढ़ापा आ गया तो उसके आगे उनका यौवन हार गया अर्थात् बुढ़ापे ने उनका यौवन नष्ट कर दिया ॥ १७ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਜੇ ਕਰਿ ਸੂਤਕੁ ਮੰਨੀਐ ਸਭ ਤੈ ਸੂਤਕੁ ਹੋਇ ॥
जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥
यदि सूतक रूपी वहम् को सत्य मान लिया जाए तो सूतक सब में होता है।

ਗੋਹੇ ਅਤੈ ਲਕੜੀ ਅੰਦਰਿ ਕੀੜਾ ਹੋਇ ॥
गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥
गोबर एवं लकड़ी में भी कीड़ा होता है।

ਜੇਤੇ ਦਾਣੇ ਅੰਨ ਕੇ ਜੀਆ ਬਾਝੁ ਨ ਕੋਇ ॥
जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥
जितने भी अनाज के दाने इस्तेमाल किए जाते हैं, कोई भी दाना जीव के बिना नहीं।

ਪਹਿਲਾ ਪਾਣੀ ਜੀਉ ਹੈ ਜਿਤੁ ਹਰਿਆ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥
सर्वप्रथम जल ही जीवन है, जिससे सब कुछ हरा-भरा (ताजा) होता है।

ਸੂਤਕੁ ਕਿਉ ਕਰਿ ਰਖੀਐ ਸੂਤਕੁ ਪਵੈ ਰਸੋਇ ॥
सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥
सूतक किस तरह दूर रखा जा सकता है ? यह सूतक हमारी पाकशाला (रसोई) में भी रहता है।

ਨਾਨਕ ਸੂਤਕੁ ਏਵ ਨ ਉਤਰੈ ਗਿਆਨੁ ਉਤਾਰੇ ਧੋਇ ॥੧॥
नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥१॥
हे नानक ! भ्रमों के कारण पड़ा सूतक इस तरह कभी दूर नहीं होता, इसे ज्ञान द्वारा ही शुद्ध करके दूर किया जा सकता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:१॥

ਮਨ ਕਾ ਸੂਤਕੁ ਲੋਭੁ ਹੈ ਜਿਹਵਾ ਸੂਤਕੁ ਕੂੜੁ ॥
मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥
मन का सूतक लोभ है अर्थात् लोभ रूपी सूतक मन को चिपकता है और जीभ का सूतक झूठ है अर्थात् झुठ रूपी सूतक जीभ से लगता है।

ਅਖੀ ਸੂਤਕੁ ਵੇਖਣਾ ਪਰ ਤ੍ਰਿਅ ਪਰ ਧਨ ਰੂਪੁ ॥
अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥
आंखों का सूतक पराई नारी, पराया-धन एवं रूप-यौवन को देखना है।

ਕੰਨੀ ਸੂਤਕੁ ਕੰਨਿ ਪੈ ਲਾਇਤਬਾਰੀ ਖਾਹਿ ॥
कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥
कानों का सूतक कानों से पराई निन्दा सुनना है।

ਨਾਨਕ ਹੰਸਾ ਆਦਮੀ ਬਧੇ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਹਿ ॥੨॥
नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥२॥
हे नानक ! इन सूतकों के कारण मनुष्य की आत्मा जकड़ी हुई यमपुरी जाती है॥ २॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਸਭੋ ਸੂਤਕੁ ਭਰਮੁ ਹੈ ਦੂਜੈ ਲਗੈ ਜਾਇ ॥
सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥
यह जीवन-मृत्यु वाला सूतक केवल भ्रम ही है, जो द्वैतभाव के कारण सबको लगा हुआ है।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਭਾਣੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
जमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥
जन्म एवं मरण प्रभु का आदेश है और उसकी इच्छा द्वारा ही मनुष्य जन्म लेता और प्राण त्यागता है।

ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਪਵਿਤ੍ਰੁ ਹੈ ਦਿਤੋਨੁ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਿ ॥
खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु स्मबाहि ॥
खाना-पीना पवित्र है, क्योंकि प्रभु ने सभी जीवों को भोजन दिया है।

ਨਾਨਕ ਜਿਨ੍ਹੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਝਿਆ ਤਿਨ੍ਹਾ ਸੂਤਕੁ ਨਾਹਿ ॥੩॥
नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा सूतकु नाहि ॥३॥
हे नानक ! जो गुरुमुख बनकर इस भेद को समझ लेता है, उसे सूतक नहीं लगता॥ ३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਵਡਾ ਕਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿਸੁ ਵਿਚਿ ਵਡੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ॥
सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥
जिस सतगुरु में महान् गुण विद्यमान हैं, उसे महान मानकर उसी की स्तुति करनी चाहिए।

ਸਹਿ ਮੇਲੇ ਤਾ ਨਦਰੀ ਆਈਆ ॥
सहि मेले ता नदरी आईआ ॥
भगवान् की कृपा से सतगुरु मिल जाए तो वह सतगुरु की बड़ाई को देखता है।

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਾ ਮਨਿ ਵਸਾਈਆ ॥
जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥
जब उसे अच्छा लगता है तो वह मनुष्य के मन में बसा देता है।

ਕਰਿ ਹੁਕਮੁ ਮਸਤਕਿ ਹਥੁ ਧਰਿ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰਿ ਕਢੀਆ ਬੁਰਿਆਈਆ ॥
करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥
ईश्वर का आदेश हो तो सतगुरु मनुष्य के मस्तक पर हाथ रखकर सभी बुराइयाँ निकाल कर दूर कर देते हैं।

ਸਹਿ ਤੁਠੈ ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਈਆ ॥੧੮॥
सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥
जब प्रभु प्रसन्न हो जाए तो नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं॥ १८ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:१ ॥

ਪਹਿਲਾ ਸੁਚਾ ਆਪਿ ਹੋਇ ਸੁਚੈ ਬੈਠਾ ਆਇ ॥
पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥
पहले ब्राह्मण आप निर्मल होकर पवित्र चौके पर बैठ जाता है।

ਸੁਚੇ ਅਗੈ ਰਖਿਓਨੁ ਕੋਇ ਨ ਭਿਟਿਓ ਜਾਇ ॥
सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥
शुद्ध भोजन जिसे किसी ने स्पर्श नहीं किया होता, उसके समक्ष लाकर परोसा जाता है।

ਸੁਚਾ ਹੋਇ ਕੈ ਜੇਵਿਆ ਲਗਾ ਪੜਣਿ ਸਲੋਕੁ ॥
सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥
इस तरह पवित्र होकर वह भोजन ग्रहण करता है और तब श्लोक पढ़ने लग जाता है।

ਕੁਹਥੀ ਜਾਈ ਸਟਿਆ ਕਿਸੁ ਏਹੁ ਲਗਾ ਦੋਖੁ ॥
कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥
जब शुद्ध भोजन अंततः अपवित्र देह में प्रविष्ट होकर मल में परिवर्तित हो जाता है, तो उसकी शुद्धता का दावा और दोष, दोनों, किसके हिस्से आएँगे?

ਅੰਨੁ ਦੇਵਤਾ ਪਾਣੀ ਦੇਵਤਾ ਬੈਸੰਤਰੁ ਦੇਵਤਾ ਲੂਣੁ ਪੰਜਵਾ ਪਾਇਆ ਘਿਰਤੁ ॥ ਤਾ ਹੋਆ ਪਾਕੁ ਪਵਿਤੁ ॥
अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥
अन्न, जल, अग्नि एवं नमक चारों ही देवता अर्थात् पवित्र पदार्थ हैं। जब पाँचवां पदार्थ घी डाल दिया जाता है तो शुद्ध एवं पवित्र भोजन बन जाता है।

ਪਾਪੀ ਸਿਉ ਤਨੁ ਗਡਿਆ ਥੁਕਾ ਪਈਆ ਤਿਤੁ ॥
पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥
देवताओं की तरह पवित्र भोजन पापी तन के संयोग से अपवित्र हो जाता है और उस पर फिर थूका जाता है।

ਜਿਤੁ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨ ਊਚਰਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਰਸ ਖਾਹਿ ॥
जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥
हे नानक ! वह मुँह जो नाम का उच्चारण नहीं करता और नाम के बिना रसों का भोग करता है,

ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਤਿਤੁ ਮੁਖਿ ਥੁਕਾ ਪਾਹਿ ॥੧॥
नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥
यूं समझ लीजिए कि उस मुँह पर थूक ही पड़ता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਭੰਡਿ ਜੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਨਿੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਮੰਗਣੁ ਵੀਆਹੁ ॥
भंडि जमीऐ भंडि निमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
नारी जन्मदात्री है, उसी के माध्यम से मनुष्य गर्भ में से जन्म लेता है, उसी के माध्यम से प्राणी का शरीर बनता है। नारी से ही उसकी सगाई एवं विवाह होता है।

ਭੰਡਹੁ ਹੋਵੈ ਦੋਸਤੀ ਭੰਡਹੁ ਚਲੈ ਰਾਹੁ ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
नारी से ही मनुष्य दोस्ती करता है और नारी द्वारा ही दुनिया की उत्पत्ति का मार्ग जारी रहता है।

ਭੰਡੁ ਮੁਆ ਭੰਡੁ ਭਾਲੀਐ ਭੰਡਿ ਹੋਵੈ ਬੰਧਾਨੁ ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
यदि किसी मनुष्य की पत्नी मर जाती है तो वह दूसरी स्त्री की खोज करता है। नारी से ही उसका दूसरों से रिश्ता बनता है।

ਸੋ ਕਿਉ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤੁ ਜੰਮਹਿ ਰਾਜਾਨ ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जमहि राजान ॥
फिर उस नारी को क्यों बुरा कहें ? जिसने बड़े-बड़े राजा महाराजा एवं महापुरुषों को जन्म दिया है।

ਭੰਡਹੁ ਹੀ ਭੰਡੁ ਊਪਜੈ ਭੰਡੈ ਬਾਝੁ ਨ ਕੋਇ ॥
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नारी से ही नारी पैदा होती है और नारी के बिना कोई भी पैदा नहीं हो सकता।

ਨਾਨਕ ਭੰਡੈ ਬਾਹਰਾ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥
किन्तु हे नानक ! केवल एक परमात्मा ही नारी के बिना अयोनि में है।

ਜਿਤੁ ਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਭਾਗਾ ਰਤੀ ਚਾਰਿ ॥
जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥
जिस मुख से सदा ही प्रभु की गुणस्तुति होती है, वह भाग्यशाली एवं सुन्दर है।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਊਜਲੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੨॥
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥२॥
हे नानक ! वह मुख उस सत्य प्रभु के दरबार में उज्ज्वल होता है।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी ॥

ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਆਪਣਾ ਜਿਸੁ ਨਾਹੀ ਸੋ ਚੁਣਿ ਕਢੀਐ ॥
सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥
हे प्रभु ! सभी आपको अपना स्वामी कहते हैं लेकिन जिसके आप नहीं है, उसे चुनकर बाहर निकाल दिया जाता है।

ਕੀਤਾ ਆਪੋ ਆਪਣਾ ਆਪੇ ਹੀ ਲੇਖਾ ਸੰਢੀਐ ॥
कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥
हर किसी प्राणी ने अपने कर्मों का फल भोगना है और अपना लेखा-जोखा चुकाना है।

ਜਾ ਰਹਣਾ ਨਾਹੀ ਐਤੁ ਜਗਿ ਤਾ ਕਾਇਤੁ ਗਾਰਬਿ ਹੰਢੀਐ ॥
जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥
यदि मनुष्य ने इस जगत् में सदा नहीं रहना तो वह क्यों अभिमान करे।

ਮੰਦਾ ਕਿਸੈ ਨ ਆਖੀਐ ਪੜਿ ਅਖਰੁ ਏਹੋ ਬੁਝੀਐ ॥ ਮੂਰਖੈ ਨਾਲਿ ਨ ਲੁਝੀਐ ॥੧੯॥
मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥१९॥
किसी को भी बुरा मत कहो और विद्या पढ़कर इस बात को समझना चाहिए। मूर्खों से कदापि झगड़ा नहीं करना चाहिए ॥१९॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:१॥

ਨਾਨਕ ਫਿਕੈ ਬੋਲਿਐ ਤਨੁ ਮਨੁ ਫਿਕਾ ਹੋਇ ॥
नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥
हे नानक ! फीका बोलने से तन-मन दोनों ही फीके (शुष्क) हो जाते हैं।

ਫਿਕੋ ਫਿਕਾ ਸਦੀਐ ਫਿਕੇ ਫਿਕੀ ਸੋਇ ॥
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥
कड़वा बोलने वाला दुनिया में असभ्य ही मशहूर हो जाता है और लोग भी उसके कड़वे वचनों से ही याद करते हैं।

ਫਿਕਾ ਦਰਗਹ ਸਟੀਐ ਮੁਹਿ ਥੁਕਾ ਫਿਕੇ ਪਾਇ ॥
फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥
असभ्य व्यक्ति अपमान का भागी बनता है और परमेश्वर के दरबार में उसे स्थान नहीं मिलता।

ਫਿਕਾ ਮੂਰਖੁ ਆਖੀਐ ਪਾਣਾ ਲਹੈ ਸਜਾਇ ॥੧॥
फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥१॥
असभ्य व्यक्ति को मूर्ख कहा जाता है और उसे हर जगह अपमानित किया जाता है।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु: १॥

ਅੰਦਰਹੁ ਝੂਠੇ ਪੈਜ ਬਾਹਰਿ ਦੁਨੀਆ ਅੰਦਰਿ ਫੈਲੁ ॥
अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥
मन से झूठे पर बाहर से सत्यवादी होने का दिखावा करने वाले दुनिया में पाखण्ड ही बनाए रखते हैं।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਜੇ ਨਾਵਹਿ ਉਤਰੈ ਨਾਹੀ ਮੈਲੁ ॥
अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥
चाहे वे अड़सठ तीर्थों का स्नान कर लें परन्तु फिर भी उनकी मन की मैल दूर नहीं होती।

ਜਿਨ੍ ਪਟੁ ਅੰਦਰਿ ਬਾਹਰਿ ਗੁਦੜੁ ਤੇ ਭਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥
जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥
इस दुनिया में वही लोग भले हैं, जिनके मन में रेशम की तरह कोमलता है, चाहे बाहर से उन्होंने शरीर पर फटे-पुराने ही कपड़े पहने हुए हैं।

ਤਿਨ੍ ਨੇਹੁ ਲਗਾ ਰਬ ਸੇਤੀ ਦੇਖਨ੍ੇ ਵੀਚਾਰਿ ॥
तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥
उनका भगवान् से बहुत प्रेम है और उसके दर्शनों का ध्यान धारण करते हैं।

ਰੰਗਿ ਹਸਹਿ ਰੰਗਿ ਰੋਵਹਿ ਚੁਪ ਭੀ ਕਰਿ ਜਾਹਿ ॥
रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥
प्रभु के प्रेम में वे हँसते हैं, प्रेम में ही रोते हैं और चुप भी हो जाते हैं।

ਪਰਵਾਹ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਕੇਰੀ ਬਾਝੁ ਸਚੇ ਨਾਹ ॥
परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥
वह अपने सत्यस्वरूप परमेश्वर के अतिरिक्त किसी की भी परवाह नहीं करते।

ਦਰਿ ਵਾਟ ਉਪਰਿ ਖਰਚੁ ਮੰਗਾ ਜਬੈ ਦੇਇ ਤ ਖਾਹਿ ॥
दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥
वे अपनी आत्मा के पोषण हेतु नाम रूपी अन्न की याचना करते हैं, और जब परमात्मा उन्हें वह प्रदान करता है, तो वे उसका आस्वादन करते हैं

ਦੀਬਾਨੁ ਏਕੋ ਕਲਮ ਏਕਾ ਹਮਾ ਤੁਮ੍ਾ ਮੇਲੁ ॥
दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥
सभी के लिए एक ही न्यायाधीश और एक ही न्याय प्रणाली है; अच्छे हों या बुरे, अंततः सभी उस परमात्मा के न्यायालय में उपस्थित होते हैं।

ਦਰਿ ਲਏ ਲੇਖਾ ਪੀੜਿ ਛੁਟੈ ਨਾਨਕਾ ਜਿਉ ਤੇਲੁ ॥੨॥
दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥२॥
हे नानक ! प्रभु के दरबार में कर्मों का लेखा-जोखा किया जाता है। अपराधी मनुष्य कोल्हू में तेल वाले बीजों की तरह पीसे जाते हैं। २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी।

ਆਪੇ ਹੀ ਕਰਣਾ ਕੀਓ ਕਲ ਆਪੇ ਹੀ ਤੈ ਧਾਰੀਐ ॥
आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥
हे परमात्मा ! आप स्वयं ही सृष्टि रचयिता है और स्वयं ही सत्ता को धारण किए हुए हैं।

ਦੇਖਹਿ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ਧਰਿ ਕਚੀ ਪਕੀ ਸਾਰੀਐ ॥
देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥
आप अपनी रचना एवं कच्ची-पक्की गोटियों (अच्छे-बुरे जीवों) को धरती पर देखते हैं।

ਜੋ ਆਇਆ ਸੋ ਚਲਸੀ ਸਭੁ ਕੋਈ ਆਈ ਵਾਰੀਐ ॥
जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥
जो भी जीव इस दुनिया में आया है, वह चला जाएगा। अपना समय आने पर सभी ने जाना ही होता है।

ਜਿਸ ਕੇ ਜੀਅ ਪਰਾਣ ਹਹਿ ਕਿਉ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥
जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥
अपने मन में से हम उस प्रभु को क्यों विस्मृत करें, जिसने हमें जीवन एवं प्राण दिए हुए हैं?

ਆਪਣ ਹਥੀ ਆਪਣਾ ਆਪੇ ਹੀ ਕਾਜੁ ਸਵਾਰੀਐ ॥੨੦॥
आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥
आओ, अपने हाथों से हम स्वयं ही अपने कार्य सम्पूर्ण करें अर्थात् शुभ कर्मों द्वारा भगवान् को प्रसन्न करके अपना जीवन कार्य संवार ले ॥ २० ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥
सलोकु महला २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २ ॥

ਏਹ ਕਿਨੇਹੀ ਆਸਕੀ ਦੂਜੈ ਲਗੈ ਜਾਇ ॥
एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥
यह कैसा प्रेम है, जो भगवान् को छोड़कर द्वैतवाद से लगता है।

ਨਾਨਕ ਆਸਕੁ ਕਾਂਢੀਐ ਸਦ ਹੀ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥
हे नानक ! सच्चा प्रेमी वही कहलाता है, जो सदा प्रभु के प्रेम में ही समाया रहता है।

ਚੰਗੈ ਚੰਗਾ ਕਰਿ ਮੰਨੇ ਮੰਦੈ ਮੰਦਾ ਹੋਇ ॥
चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥
जो व्यक्ति अपने किए शुभ कर्म के दिए फल सुख को अच्छा मानता है और अपने किए बुरे

कर्म के दिए फल दुःख को बुरा मानता है,

ਆਸਕੁ ਏਹੁ ਨ ਆਖੀਐ ਜਿ ਲੇਖੈ ਵਰਤੈ ਸੋਇ ॥੧॥
आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥१॥
उसे भगवान् का प्रेमी नहीं कहा जा सकता। वह तो अच्छे एवं बुरे के लेखे में पड़कर प्रेम का हिसाब-किताब करता है। प्रभु जो कुछ करता है, ऐसा जीव उसमें सहमत नहीं रहता ॥ १ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २ ॥

ਸਲਾਮੁ ਜਬਾਬੁ ਦੋਵੈ ਕਰੇ ਮੁੰਢਹੁ ਘੁਥਾ ਜਾਇ ॥
सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥
जो मनुष्य अपने प्रभु के आदेश को कभी प्रणाम करता है और कभी उसके किए पर संशय करता है, वह आदि से ही कुमार्गगामी हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਦੋਵੈ ਕੂੜੀਆ ਥਾਇ ਨ ਕਾਈ ਪਾਇ ॥੨॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥
हे नानक ! उसके दोनों ही कार्य झूठे हैं और प्रभु के दरबार में उसको कोई स्थान नहीं मिलता॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਸੋ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਸਮ੍ਾਲੀਐ ॥
जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥
जिसकी सेवा करने से सुख मिलता है, सदैव उस प्रभु को याद करते रहना चाहिए।

ਜਿਤੁ ਕੀਤਾ ਪਾਈਐ ਆਪਣਾ ਸਾ ਘਾਲ ਬੁਰੀ ਕਿਉ ਘਾਲੀਐ ॥
जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥
जब अपने किए कर्मों का आप ही भोगना है तो फिर हम बुरे कर्म क्यों करें ?

ਮੰਦਾ ਮੂਲਿ ਨ ਕੀਚਈ ਦੇ ਲੰਮੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀਐ ॥
मंदा मूलि न कीचई दे लमी नदरि निहालीऐ ॥
बुरा कर्म कदापि नहीं करना चाहिए, दूर-दृष्टि से नतीजे का ध्यान रखना चाहिए।

ਜਿਉ ਸਾਹਿਬ ਨਾਲਿ ਨ ਹਾਰੀਐ ਤੇਵੇਹਾ ਪਾਸਾ ਢਾਲੀਐ ॥
जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥
हमें कर्मों का ऐसा खेल नहीं खेलना चाहिए, जिसके फलस्वरूप प्रभु के समक्ष हमें लज्जित होना पड़े, अर्थात् शुभ कर्म ही करने चाहिए।

ਕਿਛੁ ਲਾਹੇ ਉਪਰਿ ਘਾਲੀਐ ॥੨੧॥
किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥
मनुष्य जन्म में ऐसी सेवा-भक्ति करो, जिससे लाभ प्राप्त हो।॥ २१॥

ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥
सलोकु महला २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २ ॥

ਚਾਕਰੁ ਲਗੈ ਚਾਕਰੀ ਨਾਲੇ ਗਾਰਬੁ ਵਾਦੁ ॥
चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
यदि कोई सेवक अपने मालिक की सेवा करता है और साथ ही अभिमानी, विवादास्पद झगड़ालू है।

ਗਲਾ ਕਰੇ ਘਣੇਰੀਆ ਖਸਮ ਨ ਪਾਏ ਸਾਦੁ ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
यदि वह अधिकतर बातें बनाता है तो वह अपने मालिक की प्रसन्नता का पात्र नहीं होता।

ਆਪੁ ਗਵਾਇ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਤਾ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ਮਾਨੁ ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
लेकिन यदि वह अपना अहंकार मिटाकर सेवा करे तो कुछ मान-सम्मान प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸ ਨੋ ਲਗਾ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਲਗਾ ਸੋ ਪਰਵਾਨੁ ॥੧॥
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥
हे नानक ! वह मनुष्य अपने उस मालिक से मिल जाता है, जिसकी सेवा में जुटा हुआ है, उसकी लगन स्वीकृत हो जाती है॥ १॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २ ॥

ਜੋ ਜੀਇ ਹੋਇ ਸੁ ਉਗਵੈ ਮੁਹ ਕਾ ਕਹਿਆ ਵਾਉ ॥
जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥
जो (संकल्प) दिल में होता है, वह (कर्मों के रूप में) प्रगट हो जाता है। किंतु स्वयं बोले गए शब्द कभी-कभी केवल मिथ्या अभिव्यक्ति मात्र होते हैं।

ਬੀਜੇ ਬਿਖੁ ਮੰਗੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵੇਖਹੁ ਏਹੁ ਨਿਆਉ ॥੨॥
बीजे बिखु मंगै अम्रितु वेखहु एहु निआउ ॥२॥
देखो ! यह कैसा न्याय है? मनुष्य बोता तो विष है परन्तु माँगता अमृत है। ॥ २ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २॥

ਨਾਲਿ ਇਆਣੇ ਦੋਸਤੀ ਕਦੇ ਨ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥
नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥
मूर्ख के साथ मित्रता कदापि ठीक नहीं होती।

ਜੇਹਾ ਜਾਣੈ ਤੇਹੋ ਵਰਤੈ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥
जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥
जैसा वह जानता है, वैसा ही वह करता है। चाहे कोई इसका निर्णय करके देख ले।

ਵਸਤੂ ਅੰਦਰਿ ਵਸਤੁ ਸਮਾਵੈ ਦੂਜੀ ਹੋਵੈ ਪਾਸਿ ॥
वसतु अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥
किसी वस्तु में दूसरी वस्तु तभी समा सकती है, यद्यपि पहले पड़ी हुई वस्तु को निकाल दिया जाए।

ਸਾਹਿਬ ਸੇਤੀ ਹੁਕਮੁ ਨ ਚਲੈ ਕਹੀ ਬਣੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥
प्रभु के समक्ष आदेश करना सफल नहीं होता, अपितु उसके समक्ष तो विनम्र प्रार्थना ही करनी चाहिए।

ਕੂੜਿ ਕਮਾਣੈ ਕੂੜੋ ਹੋਵੈ ਨਾਨਕ ਸਿਫਤਿ ਵਿਗਾਸਿ ॥੩॥
कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥
हे नानक ! छल-कपट की कमाई करने से छल-कपट ही हासिल होता है। लेकिन प्रभु का यशोगान करने से प्राणी प्रसन्न हो जाता है।॥ ३ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २॥

ਨਾਲਿ ਇਆਣੇ ਦੋਸਤੀ ਵਡਾਰੂ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ॥
नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥
अज्ञानी व्यक्ति के साथ मित्रता एवं बड़े आदमी के साथ प्रेम

ਪਾਣੀ ਅੰਦਰਿ ਲੀਕ ਜਿਉ ਤਿਸ ਦਾ ਥਾਉ ਨ ਥੇਹੁ ॥੪॥
पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥४॥
जल में लकीर की भाँति है, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं रहता॥ ४॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २॥

ਹੋਇ ਇਆਣਾ ਕਰੇ ਕੰਮੁ ਆਣਿ ਨ ਸਕੈ ਰਾਸਿ ॥
होइ इआणा करे कमु आणि न सकै रासि ॥
यदि एक नासमझ व्यक्ति कोई कार्य करे तो वह इसे सम्पूर्ण नहीं कर सकता।

ਜੇ ਇਕ ਅਧ ਚੰਗੀ ਕਰੇ ਦੂਜੀ ਭੀ ਵੇਰਾਸਿ ॥੫॥
जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥५॥
यदि एकाध भला काम कर भी ले तो वह दूसरा बिगाड़ देता है॥ ५॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਚਾਕਰੁ ਲਗੈ ਚਾਕਰੀ ਜੇ ਚਲੈ ਖਸਮੈ ਭਾਇ ॥
चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥
जो सेवक स्वामी की नौकरी करते हुए अपने स्वामी की इच्छानुसार चले तो,

ਹੁਰਮਤਿ ਤਿਸ ਨੋ ਅਗਲੀ ਓਹੁ ਵਜਹੁ ਭਿ ਦੂਣਾ ਖਾਇ ॥
हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥
इससे एक तो उसे बड़ा मान-सम्मान मिलता है, दूसरा उसे दुगुना फल प्राप्त होता है।

ਖਸਮੈ ਕਰੇ ਬਰਾਬਰੀ ਫਿਰਿ ਗੈਰਤਿ ਅੰਦਰਿ ਪਾਇ ॥
खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥
यदि वह अपने स्वामी की बराबरी करता है तो वह मन में लज्जित ही होता है।

ਵਜਹੁ ਗਵਾਏ ਅਗਲਾ ਮੁਹੇ ਮੁਹਿ ਪਾਣਾ ਖਾਇ ॥
वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥
परिणामस्वरूप अपनी पहली कमाई भी गंवा लेता है और सदा अपमानित होता है।

ਜਿਸ ਦਾ ਦਿਤਾ ਖਾਵਣਾ ਤਿਸੁ ਕਹੀਐ ਸਾਬਾਸਿ ॥
जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥
जिसका दिया हम खाते हैं, उसका हमें कोटि-कोटि आभार व्यक्त करना चाहिए।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ ਚਲਈ ਨਾਲਿ ਖਸਮ ਚਲੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥੨੨॥
नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥२२॥
हे नानक ! प्रभु के समक्ष आदेश नहीं अपितु उनके समक्ष विनम्र प्रार्थना ही सफल होती है।॥ २२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥
सलोकु महला २ ॥
श्लोक, दूसरे गुरु द्वारा: २॥

ਏਹ ਕਿਨੇਹੀ ਦਾਤਿ ਆਪਸ ਤੇ ਜੋ ਪਾਈਐ ॥
एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥
यह कैसी देन है, जो हम स्वयं मांग कर प्राप्त करते हैं ?

ਨਾਨਕ ਸਾ ਕਰਮਾਤਿ ਸਾਹਿਬ ਤੁਠੈ ਜੋ ਮਿਲੈ ॥੧॥
नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥
हे नानक ! अद्‌भुत देन वह है, जो प्रभु की कृपा-दृष्टि होने पर प्राप्त होती है॥ १॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
श्लोक, द्वितीय गुरु: २॥

ਏਹ ਕਿਨੇਹੀ ਚਾਕਰੀ ਜਿਤੁ ਭਉ ਖਸਮ ਨ ਜਾਇ ॥
एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥
यह कैसी चाकरी (सेवा) है, जिससे स्वामी का भय दूर नहीं होता ?

ਨਾਨਕ ਸੇਵਕੁ ਕਾਢੀਐ ਜਿ ਸੇਤੀ ਖਸਮ ਸਮਾਇ ॥੨॥
नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥
हे नानक ! सच्चा सेवक वही कहलवाता है, जो अपने स्वामी में समा जाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी ॥

ਨਾਨਕ ਅੰਤ ਨ ਜਾਪਨ੍ਹ੍ਹੀ ਹਰਿ ਤਾ ਕੇ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥
नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥
हे नानक ! परमात्मा का अन्त जाना नहीं जाता। उसका ओर-छोर कोई नहीं, वह अनन्त है।

ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਸਾਖਤੀ ਫਿਰਿ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਮਾਰ ॥
आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥
वह स्वयं ही सृष्टि की रचना करते हैं और स्वयं ही अपनी रचित सृष्टि का नाश कर देते हैं।

ਇਕਨ੍ਹ੍ਹਾ ਗਲੀ ਜੰਜੀਰੀਆ ਇਕਿ ਤੁਰੀ ਚੜਹਿ ਬਿਸੀਆਰ ॥
इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥
कुछ जीवों के गले पर जंजीरें पड़ी हुई हैं अर्थात् बन्धनों में जकड़े हुए हैं और कई असंख्य घोड़ों पर सवार होकर आनंद प्राप्त करते हैं।

ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰੇ ਆਪਿ ਹਉ ਕੈ ਸਿਉ ਕਰੀ ਪੁਕਾਰ ॥
आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥
वह स्वयं ही कार्य करता है, और वही हमसे कार्य कराता है; फिर मुझे पुकार भी किससे करनी चाहिए?

ਨਾਨਕ ਕਰਣਾ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਫਿਰਿ ਤਿਸ ਹੀ ਕਰਣੀ ਸਾਰ ॥੨੩॥
नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥२३॥
हे नानक ! जिस प्रभु ने सृष्टि की रचना की है, वही फिर उसकी देखरेख करता है॥ २३ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक, प्रथम गुरु:१॥

ਆਪੇ ਭਾਂਡੇ ਸਾਜਿਅਨੁ ਆਪੇ ਪੂਰਣੁ ਦੇਇ ॥
आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥
भगवान् ने स्वयं ही जीव रूपी बर्तन बनाए हैं एवं वह स्वयं ही उनके शरीर में गुण-अवगुण,

सुख-दुःख डालता है।

ਇਕਨ੍ਹੀ ਦੁਧੁ ਸਮਾਈਐ ਇਕਿ ਚੁਲ੍ਹੈ ਰਹਨ੍ਹਿ ਚੜੇ ॥
इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥
कुछ जीव रूपी बर्तनों में दूध भरा रहता है अर्थात् सद्गुण विद्यमान रहते हैं और कई चूल्हे पर ताप सहते रहते हैं।

ਇਕਿ ਨਿਹਾਲੀ ਪੈ ਸਵਨ੍ਹਿ ਇਕਿ ਉਪਰਿ ਰਹਨਿ ਖੜੇ ॥
इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥
कुछ भाग्यशाली बिस्तरों पर निश्चित होकर विश्राम करते हैं और कई उनकी सेवा में खड़े होकर पहरा देते हैं।

ਤਿਨ੍ਹਾ ਸਵਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ੍ਹ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੧॥
तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥१॥
हे नानक ! भगवान् उन मनुष्यों का जीवन सुन्दर बना देता है, जिन पर वह अपनी कृपा-दृष्टि करता है॥ १॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
श्लोक, द्वितीय गुरुः २॥

ਆਪੇ ਸਾਜੇ ਕਰੇ ਆਪਿ ਜਾਈ ਭਿ ਰਖੈ ਆਪਿ ॥
आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥
भगवान् स्वयं ही संसार बनाते हैं और स्वयं ही सब कुछ करते हैं। वह स्वयं ही अपनी रचना की देखभाल करते हैं।

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਕੈ ਦੇਖੈ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ॥
तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥
वह दुनिया में जीवों को उत्पन्न करके उनके जन्म-मरण को देखते रहते हैं।

ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਨਾਨਕਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥੨॥
किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥२॥
हे नानक ! भगवान् के अतिरिक्त किसके समक्ष प्रार्थना कर सकते हैं, जबकि वह स्वयं ही सब कुछ करते हैं॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पौड़ी॥

ਵਡੇ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ਕਿਛੁ ਕਹਣਾ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥
वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥
महान प्रभु की महिमा एवं बड़प्पन का वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਸੋ ਕਰਤਾ ਕਾਦਰ ਕਰੀਮੁ ਦੇ ਜੀਆ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਿ ॥
सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु स्मबाहि ॥
वह विश्व के रचयिता, अपनी कुदरत को बनाने वाले तथा स्वयं जीवों पर कृपा-दृष्टि करने वाले हैं। वह समस्त जीवों का पोषण करते है।

ਸਾਈ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਧੁਰਿ ਛੋਡੀ ਤਿੰਨੈ ਪਾਇ ॥
साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ ॥
जीव वही कर्म करता है, जो उसने आदि से ही भाग्य में लिख दिया है।

ਨਾਨਕ ਏਕੀ ਬਾਹਰੀ ਹੋਰ ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥
नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥
हे नानक ! उस एक प्रभु के अतिरिक्त दूसरा कोई शरण का स्थान नहीं।

ਸੋ ਕਰੇ ਜਿ ਤਿਸੈ ਰਜਾਇ ॥੨੪॥੧॥ ਸੁਧੁ
सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥ सुधु
वह वही कुछ करता है, जो उसे अच्छा लगता है॥ २४॥ १॥ शुद्ध॥

ਅਰਦਾਸ

प्रार्थना

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ॥
ईश्वर एक है। सारी विजय विलक्षण गुरु (भगवान्) की है।

ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ।
आदरणीय तलवार या कृपाण (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्) हमारी सहायता करें!

ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦||
दसवें गुरु द्वारा सुनाई गई आदरणीय तलवार की कविता ।

ਪ੍ਰਿਥਮ ਭਗੌਤੀ ਸਿਮਰਿ ਕੈ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਲਈਂ ਧਿਆਇ॥
पहले तलवार को याद करो (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्); फिर गुरु नानक को याद करें (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें)

ਫਿਰ ਅੰਗਦ ਗੁਰ ਤੇ ਅਮਰਦਾਸੁ ਰਾਮਦਾਸੈ ਹੋਈਂ ਸਹਾਇ॥
फ़िर श्री गुरु अंगद, श्री गुरु अमर दास और गुरु राम दास का स्मरण और ध्यान करो; वे हमारी मदद करें ! (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਅਰਜਨ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਨੋ ਸਿਮਰੌਂ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਰਾਇ॥
श्री गुरु अर्जन, गुरु हरगोबिंद और गुरु हर राय का स्मरण और ध्यान करो। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਧਿਆਈਐ ਜਿਸ ਡਿਠੈ ਸਭਿ ਦੁਖ ਜਾਇ॥
पूज्य गुरु हर कृष्ण का स्मरण और ध्यान करें, जिनके दर्शन मात्र से सारे कष्ट मिट जाते हैं। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਿਮਰਿਐ ਘਰ ਨਉ ਨਿਧਿ ਆਵੈ ਧਾਇ॥
गुरु तेग बहादुर को याद करें और फिर आध्यात्मिक धन के नौ स्रोत (धैर्य, क्षमा दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुधि, विद्या सत्य, अक्रोध) आपके घर में तेजी से आएंगे।

ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥
हे प्रभु ! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਵਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ! ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥
आदरणीय दसवें गुरु गोबिंद सिंह (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें) को याद करें। हे भगवान्! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀਆਂ ਦੀ ਜੋਤ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਪਾਠ ਦੀਦਾਰ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
आदरणीय गुरु ग्रंथ साहिब में निहित दस राजाओं के दिव्य प्रकाश पर विचार करें और ध्यान करें और अपने विचारों को गुरु ग्रंथ साहिब की दिव्य शिक्षाओं की ओर मोड़ें और आनंद प्राप्त करें; बोले वाहेगुरु!(विलक्षण गुरु)

ਪੰਜਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਚੌਹਾਂ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦਿਆਂ, ਚਾਲ੍ਹੀਆਂ ਮੁਕਤਿਆਂ, ਹਠੀਆਂ ਜਪੀਆਂ, ਤਪੀਆਂ, ਜਿਨ੍ਹਾ ਨਾਮ ਜਪਿਆ, ਵੰਡ ਛਕਿਆ, ਦੇਗ ਚਲਾਈ, ਤੇਗ ਵਾਹੀ, ਦੇਖ ਕੇ ਅਣਡਿੱਠ ਕੀਤਾ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਸਚਿਆਰਿਆਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ, ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
पाँच प्यारे, (गुरु गोबिंद सिंह के)चार पुत्रों के कर्मों के बारे में सोचो; चालीस शहीदों में से; अदम्य दृढ़ संकल्प के बहादुर सिक्खों की; नाम के रंग में डूबे भक्तों की; उनमें से जो नाम में विलीन थे; उन्हें जिन्होंने नाम का स्मरण किया और साथ में भोजन किया; उन्हें जिन्होंने नि:शुल्क रसोई शुरू की; उन्हें जिन्होंने अपनी तलवारें चलाईं (सत्य की रक्षा के लिए); दूसरों की कमियों को नज़रअंदाज करने वालों को; उपरोक्त सभी शुद्ध और वास्तव में समर्पित व्यक्ति थे; बोल वाहे गुरु!(विलक्षण गुरु)

ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਿੰਘਾਂ ਸਿੰਘਣੀਆਂ ਨੇ ਧਰਮ ਹੇਤ ਸੀਸ ਦਿੱਤੇ, ਬੰਦ ਬੰਦ ਕਟਾਏ, ਖੋਪਰੀਆਂ ਲੁਹਾਈਆਂ, ਚਰਖੜੀਆਂ ਤੇ ਚੜ੍ਹੇ, ਆਰਿਆਂ ਨਾਲ ਚਿਰਾਏ ਗਏ, ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ, ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਹਾਰਿਆ, ਸਿੱਖੀ ਕੇਸਾਂ ਸੁਆਸਾਂ ਨਾਲ ਨਿਬਾਹੀ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
उन वीर सिक्ख पुरुषों और स्त्रियों की अनुपम सेवा को सोचो और याद करो, जिन्होंने अपना सिर न्यौछावर कर दिए, किन्तु सिक्ख धर्म का समर्पण नहीं किया; जिन्होंने शरीर के एक-एक जोड़ के टुकड़े-टुकड़े कर लिए; जिन्होंने अपनी सिर की खाल निकलवा दी; जिन्हें बांधकर पहियों पर घुमाया जाता था और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते थे; जिन्हें आरी से काटा गया था; जिवित खालें उतारी गईं; जिन्होंने गुरुद्वारों की मर्यादा बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया; जिन्होंने अपने सिक्ख धर्म को नहीं छोड़ा; जिन्होंने अपना सिक्ख धर्म रखा और अपने लंबे केशों को आखिरी सांस तक सहेज कर रखा; बोल वाहे गुरु!

ਪੰਜਾਂ ਤਖਤਾਂ, ਸਰਬੱਤ ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
अपने विचारों को सिक्ख धर्म के सभी सिंहासनों और सभी गुरुद्वारों की ओर केंद्रित करें; बोलो वाहे गुरु!

ਪ੍ਰਿਥਮੇ ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ, ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੋ ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਚਿਤ ਆਵੇ, ਚਿੱਤ ਆਵਨ ਕਾ ਸਦਕਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹੋਵੇ।
पहले तो सारे आदरणीय खालसा यह दुआ करते हैं कि वे आपके नाम का ध्यान करें; और इस तरह के ध्यान के माध्यम से सभी सुख और आराम मिलें।

ਜਹਾਂ ਜਹਾਂ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਸਾਹਿਬ, ਤਹਾਂ ਤਹਾਂ ਰਛਿਆ ਰਿਆਇਤ, ਦੇਗ ਤੇਗ ਫ਼ਤਹਿ, ਬਿਰਦ ਕੀ ਪੈਜ, ਪੰਥ ਕੀ ਜੀਤ, ਸ੍ਰੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਹਾਇ, ਖਾਲਸੇ ਜੀ ਕੇ ਬੋਲ ਬਾਲੇ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
जहाँ भी आदरणीय खालसा उपस्थित हों, अपनी सुरक्षा और कृपा प्रदान करें; नि:शुल्क रसोई और तलवार कभी विफल न हो; अपने भक्तों का मान बनाए रखना; सिक्ख लोगों को विजय दिलाओ; सम्मानित तलवार हमेशा हमारी सहायता के लिए आए; खालसा का सदा सम्मान हो ; बोले वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖੀ ਦਾਨ, ਕੇਸ ਦਾਨ, ਰਹਿਤ ਦਾਨ, ਬਿਬੇਕ ਦਾਨ, ਵਿਸਾਹ ਦਾਨ, ਭਰੋਸਾ ਦਾਨ, ਦਾਨਾਂ ਸਿਰ ਦਾਨ, ਨਾਮ ਦਾਨ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਦੇ ਇਸ਼ਨਾਨ, ਚੌਂਕੀਆਂ, ਝੰਡੇ, ਬੁੰਗੇ, ਜੁਗੋ ਜੁਗ ਅਟੱਲ, ਧਰਮ ਕਾ ਜੈਕਾਰ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ! ! !
सिक्खों को सिक्ख धर्म का दान, लंबे केशों का दान, सिक्ख धर्म का दान, दिव्य ज्ञान का दान, दृढ़ विश्वास का दान, विश्वास का दान और नाम का सबसे बड़ा उपहार प्रदान करें। हे प्रभु ! राग-रागी, हवेली और झंडे हमेशा के लिए स्थित रहें; सत्य की हमेशा विजय हो; बोलो वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਦਾ ਮਨ ਨੀਵਾਂ, ਮਤ ਉੱਚੀ ਮਤ ਦਾ ਰਾਖਾ ਆਪ ਵਾਹਿਗੁਰੂ।
सभी सिक्खों का मन विनम्र रहे और उनका ज्ञान ऊंचा रहे; हे प्रभु ! आप ज्ञान के रक्षक हैं।

ਹੇ ਨਿਮਾਣਿਆਂ ਦੇ ਮਾਣ, ਨਿਤਾਣਿਆਂ ਦੇ ਤਾਣ, ਨਿਓਟਿਆਂ ਦੀ ਓਟ, ਸੱਚੇ ਪਿਤਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ! ਆਪ ਦੇ ਹਜ਼ੂਰ.....ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ।
हे सच्चे पातशाह, वाहे गुरु! आप नम्र लोगों के मान हैं, असहायों की शक्ति हैं, आश्रयहीनों के आश्रय हैं, हम विनम्रतापूर्वक आपकी उपस्थिति में प्रार्थना करते हैं... .. (यहाँ किए गए अवसर या प्रार्थना को प्रतिस्थापित करें) ।

ਅੱਖਰ ਵਾਧਾ ਘਾਟਾ ਭੁੱਲ ਚੁੱਕ ਮਾਫ ਕਰਨੀ। ਸਰਬੱਤ ਦੇ ਕਾਰਜ ਰਾਸ ਕਰਨੇ।
कृपया उपरोक्त प्रार्थना को पढ़ने में हमारे दोषों और कमियों को क्षमा करें। कृपया सभी के उद्देश्यों को पूरा करें।

ਸੇਈ ਪਿਆਰੇ ਮੇਲ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਿਲਿਆਂ ਤੇਰਾ ਨ ਚਿੱਤਆਵੇ। ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਚੜ੍ਹਦੀ ਕਲਾ, ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ ਸਰਬੱਤ ਦਾ ਭਲਾ।
हमें उन सच्चे भक्तों से मिलाने की कृपा करें जिनसे हम आपके नाम का स्मरण और ध्यान कर सकें। हे परमेश्वर! सच्चे गुरु नानक के माध्यम से, आपका नाम ऊँचा हो सकता है, और आपकी इच्छा के अनुसार सभी समृद्ध हो सकते हैं।

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖ਼ਾਲਸਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ।
खालसा भगवान् का है; सभी विजय भगवान् की विजय है।

आत्मा की यात्रा पर निकलें: अपनी आत्मा का पोषण करें

अपनी आध्यात्मिक यात्रा को उन्नत करने और जीवन में गहन अर्थ खोजने के लिए प्रथाओं की खोज करें।

यात्रा के लिए सिख धर्म के तीन मूलभूत सिद्धांत :

नाम जपना : ईश्वर का स्मरण

किरत करनी : ईमानदारी से काम करो

वंड छकना : दूसरों के साथ साझा करना

ये हमारा आध्यात्मिक मुक्ति और एक न्यायपूर्ण समाज की ओर अग्रसर करते हैं । गुरु ग्रंथ साहिब में निहित ये सिद्धांत सिख जीवन का आधार हैं।

चौथे गुरु रामदास जी के दैनिक अभ्यास के लिए ज्ञान : गुरु ग्रंथ साहिब (पृष्ठ 305-306) में, उन्होंने एक सिक्ख की दैनिक आध्यात्मिक यात्रा के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की है:

1. **दिन का प्रथम कार्य:** गुरु का सच्चा शिष्य प्रत्येक दिन का प्रारम्भ प्रेमपूर्वक ईश्वर का स्मरण करके करता है।

2. **शरीर और मन को शुद्ध करें:** सुबह जल्दी उठें, स्नान करें और ईश्वर के स्मरण में डूब जाएं, ऐसा महसूस करें कि आपकी आत्मा दिव्य अमृत में नहा रही है।

3. **स्मरण के माध्यम से मुक्ति:** गुरु की शिक्षाओं का पालन करने और भक्ति के साथ ईश्वर के नाम का स्मरण करने से सांसारिक आसक्तियों के कारण उत्पन्न दुःख और आंतरिक अशांति दूर हो जाती है।

4. **गाएँ और चिंतन करें:** निरंतर दिव्य स्तुति गाएं और अपने दैनिक कार्यों में दिव्य नाम का चिंतन करें।

5. **शांति का प्रकाश स्तम्भ बनें:** गुरु का अनुयायी जो हर सांस के साथ ईश्वरीय के नाम का प्रेमपूर्वक स्मरण करता है, वह एक शांत और प्रेरणादायक आत्मा बन जाती है।

6. **दिव्य ज्ञान प्राप्त करें:** गुरु यह दिव्य ज्ञान उन लोगों को प्रदान करते हैं जिन्होंने उनकी कृपा अर्जित की है।

7. **दूसरों को प्रेरित करें:** गुरु नानक उस शिष्य को नमन करते हैं जो न केवल ईश्वरीय

नाम का स्मरण करता है बल्कि दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है।

8. **दुर्लभ एवं बहुमूल्य आत्माएं:** सच्चे रूप से समर्पित व्यक्ति दुर्लभ होते हैं, फिर भी ईश्वर के प्रति उनके स्मरण से असंख्य अन्य लोगों को आध्यात्मिक रूप से लाभ होता है।

9. **नकारात्मकता से बचें:** उन लोगों से दूरी बनाए रखें जो गुरु की शिक्षाओं की अवहेलना करते हैं और आध्यात्मिक अज्ञानता के चक्र में फँसे रहते हैं। उन लोगों से सावधान रहें जो आपके सामने मीठी-मीठी बातें करते हैं, लेकिन पीठ पीछे नकारात्मकता फैलाते हैं।

यात्रा के लिए दर्शन

सिक्ख धर्म के दर्शनशास्त्र की विशेषता आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया के लिए तर्क, व्यापकता और "तामझाम रहित" दृष्टिकोण है। इसका धर्मशास्त्र सादगी द्वारा चिह्नित है। सिक्ख नैतिकता में व्यक्ति के स्वयं के प्रति कर्त्तव्य और समाज (संगत) के प्रति कर्त्तव्य के बीच कोई संघर्ष नहीं है।

सिक्ख धर्म लगभग 500 साल पहले गुरु नानक द्वारा स्थापित सबसे कम उम्र का विश्व धर्म है। यह ब्रह्मांड के एक सर्वोच्च अस्तित्व और निर्माता (वाहेगुरु) में विश्वास पर बल देता है। यह शाश्वत आनंद के लिए एक सरल सीधा मार्ग प्रदान करता है और प्रेम और विश्वव्यापी भाईचारे का संदेश फैलाता है। सिक्ख धर्म दृढ़ता से एक एकेश्वरवादी विश्वास है और भगवान् को एकमात्र ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानता है जो समय या स्थान की सीमाओं के अधीन नहीं है।

सिक्ख धर्म का मानना है कि ईश्वर केवल एक ही है, जो निर्माता, निर्वाहक, विनाशक है और मानव रूप नहीं लेता है। सिक्ख धर्म में अवतार के सिद्धांत का कोई स्थान नहीं है। यह देवी-देवताओं और अन्य देवी-देवताओं को कोई मूल्य नहीं देता है।

सिक्ख धर्म में नैतिकता और धर्म एक साथ चलते हैं। आध्यात्मिक विकास की दिशा में क़दम बढ़ाने के लिए व्यक्ति को दैनिक जीवन में नैतिक गुणों को अपने मन में धारण करना चाहिए और सद्गुणों का अभ्यास करना चाहिए। ईमानदारी, करुणा, उदारता, धैर्य और विनम्रता जैसे गुणों को केवल प्रयासों और मन की दृढ़ता से ही विकसित किया जा सकता है। हमारे महान गुरुओं का जीवन इस दिशा में प्रेरणा का स्रोत है।

सिक्ख धर्म सिखाता है कि मानव जीवन का लक्ष्य जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ना और ईश्वर में विलीन होना है। यह गुरु की शिक्षाओं का पालन, पवित्र नाम (नाम) पर ध्यान और सेवा और दान के कार्यों के संपादन से पूरा किया जा सकता है।

नाम मार्ग भगवान् के स्मरण के लिए दैनिक भक्ति पर बल देता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए पांच भावनाओं, अर्थात, काम (इच्छा), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (सांसारिक लगाव) और अहंकार (अभिमान) को नियंत्रित करना होगा। संघ अनुष्ठान और नियमित प्रथाओं जैसे उपवास और तीर्थयात्रा, शकुन और तपस्या को सिक्ख धर्म में अस्वीकार कर दिया गया है। मानव जीवन का लक्ष्य भगवान् के साथ विलीन होना है और यह गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं का पालन करके पूरा किया जाता है। सिक्ख धर्म भक्ति मार्ग या निष्ठा मार्ग पर बल देता है। यद्यपि, यह ज्ञान मार्ग (ज्ञान का मार्ग) और कर्म मार्ग (कार्य का मार्ग) के महत्व को पहचानता है। यह आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ईश्वर की कृपा अर्जित करने की आवश्यकता पर सबसे अधिक बल देता है।

सिक्ख धर्म एक आधुनिक, तार्किक और व्यावहारिक धर्म है। यह मानता है कि सामान्य पारिवारिक जीवन (गृहस्थ) मोक्ष के लिए कोई बाधा नहीं है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य या संसार का त्याग आवश्यक नहीं है। सांसारिक व्याधियों और प्रलोभनों के बीच अलग रहना संभव है। एक भक्त को संसार में रहना चाहिए और फिर भी अपने सिर को सामान्य तनाव और प्रलोभनों से स्वयं को दूर रखना चाहिए। वह एक विद्वान सैनिक और भगवान् के लिए संत होना चाहिए।

सिक्ख धर्म समस्त संसार का एक "धर्मनिरपेक्ष धर्म" है और इस प्रकार जाति, संप्रदाय, वंश या लिंग के आधार पर सभी भेदों को अमान्य करता है। यह मानता है कि सभी मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में समान हैं। गुरुओं ने महिलाओं की समानता पर बल दिया और कन्या भ्रूण हत्या और सती प्रथा को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का भी सक्रिय रूप से प्रचार किया और पर्दा प्रथा (महिलाओं का पर्दा पहनने) को अस्वीकार कर दिया। मन को ईश्वर पर केंद्रित करने के लिए व्यक्ति को पवित्र नाम (नाम) का ध्यान करना चाहिए और सेवा और दान के कार्यों को करना चाहिए। ईमानदारी से काम करके (किरत करना) अपनी आजीविका अर्जित करना सम्माननीय माना जाता है, न कि भीख मांग कर या बेईमानी से । वंद छकना, दूसरों के साथ साझा करना भी एक सामाजिक जिम्मेदारी है। व्यक्ति से जरूरतमंद लोगों की मदद, दसवंध (अपनी कमाई का 10%) के माध्यम से करने की उम्मीद की जाती है। सेवा, सामुदायिक सेवा भी सिक्ख धर्म का अभिन्न अंग है। सभी धर्मों के लोगों के लिए खुली हर गुरुद्वारे में मिलने वाली निःशुल्क सामुदायिक रसोई (लंगर) इस सामुदायिक सेवा की एक अभिव्यक्ति है।

सिक्ख धर्म आशावाद और आशा की वकालत करता है। यह निराशावाद की विचारधारा को स्वीकार नहीं करता है।

गुरुओं का मानना था कि इस जीवन का उद्देश्य और एक लक्ष्य है। यह आत्मज्ञान और ईश्वर की प्राप्ति का अवसर प्रदान करता है। इसके अलावा मनुष्य अपने कार्यों के लिए स्वयं उत्तरदायी है। वह अपने कार्यों के परिणामों से प्रतिरक्षा का दावा नहीं कर सकता। इसलिए वह जो करता है उसमें बहुत सतर्क रहना चाहिए।

सिक्ख ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब, शाश्वत गुरु हैं। यह एकमात्र धर्म है जिसने पवित्र पुस्तक को एक धार्मिक गुरु का पद दिया है। सिक्ख धर्म में जीवित मानव गुरु (देहधारी) के लिए कोई स्थान नहीं है।

महिलाओं की भूमिका

सिक्ख धर्म के सिद्धांतों में कहा गया है कि महिलाओं के पास पुरुषों के समान ही आत्माएं हैं और उनकी आध्यात्मिकता को विकसित करने का समान अधिकार है। वे धार्मिक सभाओं का नेतृत्व कर सकती हैं, अखंड पथ (पवित्र शास्त्रों का निरंतर पाठ) में भाग ले सकती हैं, कीर्तन (भजनों का सामूहिक गायन) कर सकती हैं, ग्रन्थियों (पुजारियों) के रूप में काम कर सकती हैं। वे सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं। सिक्ख धर्म पुरुषों और महिलाओं को समानता देने वाला पहला प्रमुख विश्व धर्म था। गुरु नानक ने लिंग आधारित समानता का उपदेश दिया, और उनके बाद आने वाले गुरुओं ने महिलाओं को सिक्ख पूजा और अभ्यास की सभी गतिविधियों में पूर्ण भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"महिला और पुरुष, सभी भगवान् द्वारा बनाए गए हैं। यह सब भगवान् का खेल है। नानक कहते हैं, तेरी सारी रचना अच्छी और पवित्र है" -गुरु ग्रंथ पृष्ठ 304

सिक्ख इतिहास ने पुरुषों की सेवा, भक्ति, बलिदान और बहादुरी में महिलाओं की भूमिका को समान रूप से चित्रित किया है। सिक्ख परंपरा में महिलाओं की नैतिक गरिमा, सेवा और आत्म-बलिदान के कई उदाहरण लिखे गए हैं।

सिक्ख धर्म के अनुसार पुरुष और महिला एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अंतर्संबंधों और अन्योन्याश्रय की व्यवस्था में जहाँ पुरुष स्त्री से जन्म लेता है, और स्त्री पुरुष के बीज से पैदा होती है। सिक्ख धर्म के अनुसार एक पुरुष एक महिला के बिना अपने जीवन में सुरक्षित और पूर्ण महसूस नहीं कर सकता है, और एक पुरुष की सफलता उस महिला के प्यार और समर्थन से संबंधित है जो उसके साथ अपना जीवन साझा करती है, और इसके विपरीत। गुरु नानक ने कहा: "[यह] एक महिला है जो दौड़ को जारी रखती है" और हमें "महिला को शापित और निंदित नहीं समझना चाहिए, [जब] महिला से नेता और राजा पैदा होते हैं।" SGGS पृष्ठ 473.

उद्धार: उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि क्या कोई धर्म महिलाओं को मोक्ष प्राप्त करने, भगवान् की प्राप्ति या उच्चतम आध्यात्मिक क्षेत्र प्राप्त करने में सक्षम मानता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है," सभी प्राणियों में ईश्वर व्यापक हैं, ईश्वर सभी रूपों में पुरुष और महिलामें व्यापत हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 605)।

गुरु ग्रंथ साहिब के उपरोक्त कथन के अनुसार, ईश्वर का प्रकाश दोनों लिंगों के साथ समान रूप से रहता है। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों गुरु की शिक्षाओं का पालन करके समान रूप से मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। कई धर्मों में स्त्री को पुरुष की आध्यात्मिकता में बाधक माना जाता है,किन्तु सिक्ख धर्म में नहीं। गुरु ने इसे अस्वीकार कर दिया। 'सिक्ख धर्म पर वर्तमान विचार' में,

ऐलिस बसरके कहते हैं, "पहले गुरु ने महिला को पुरुष के बराबर रखा ... महिला पुरुष के लिए बाधा नहीं थी, लेकिन भगवान् की सेवा करने और मोक्ष की तलाश में एक भागीदार थी"।

विवाह: गुरु नानक देव ने गृहस्थ की संस्तुत की - एक गृहस्थ का जीवन, ब्रह्मचर्य और त्याग के स्थान पर, पति और पत्नी समान भागीदार थे और दोनों को स्वामीभक्ति की आज्ञा दी गई थी। पवित्र छंदों में, घरेलू सुख को एक पोषित आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है और विवाह ने ईश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए एक निरंतर रूपक प्रदान किया है। भाई गुरदास, प्रारंभिक सिक्ख धर्म के कवि और सिख सिद्धांत के एक आधिकारिक व्याख्याकार, महिलाओं को उच्च सम्मान देते हैं। वे कहते हैं:

"एक महिला, अपने माता-पिता के घर में प्रिय होती है, जिसे उसके पिता और माता बहुत प्यार करते हैं। अपने ससुराल में, वह परिवार का स्तंभ होती है, उनके अच्छे भाग्य की दायित्व होती है... आध्यात्मिक ज्ञान एवं मोक्ष में भागीदार और महान गुणों से संपन्न, एक महिला, पुरुष का आधा हिस्सा, उसे मुक्ति के द्वार तक ले जाती है। (वारन, वि. 16)

समान स्थिति: पुरुषों और महिलाओं के बीच समान स्थिति सुनिश्चित करने के लिए, गुरुओं ने दीक्षा, निर्देश या संगत (पवित्र फेलोशिप) और पंगत (एक साथ भोजन करना) गतिविधियों में लिंग के बीच कोई अंतर नहीं किया। सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश के अनुसार, गुरु अमर दास ने महिलाओं द्वारा घूंघट के प्रयोग का विरोध किया। उन्होंने शिष्यों में महिलाओं को कुछ समुदायों की निगरानी के लिए नियुक्त किया और सती प्रथा के विरुद्ध प्रचार किया। सिक्ख इतिहास में कई महिलाओं के नाम दर्ज हैं, जैसे माता गुजरी माई भागो, माता सुंदरी, रानी साहिब कौर, रानी सदा कौर और महारानी जींद कौर, जिन्होंने अपने समय की घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा: सिक्ख धर्म में शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह किसी की भी सफलता की कुंजी है। यह व्यक्तिगत विकास की एक प्रक्रिया है और यही कारण है कि तीसरे गुरु ने कई विद्यालयों की स्थापना की। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"सभी दिव्य ज्ञान और चिंतन गुरु के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 831) ।

सभी के लिए शिक्षा आवश्यक है और सभी को सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए काम करना चाहिए। तीसरे गुरु द्वारा भेजे गए सिक्ख मिशनरियों में से बावन महिलाएँ थीं। 'सिक्ख महिलाओं की भूमिका और स्थिति में, डॉ मोहिंदर कौर गिल लिखती हैं, **"गुरु अमर दास को विश्वास था कि कोई भी शिक्षा तब तक जड़ नहीं ले सकती जब तक कि उन्हें महिलाओं द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है।"**

कपड़ों पर प्रतिबंध: महिलाओं को घूंघट न पहनने की आवश्यकता के अतिरिक्त, सिक्ख धर्म परिधान संहिता के संबंध में एक सरल लेकिन बहुत महत्वपूर्ण वर्णन करता है। यह लिंग की परवाह किए बिना सभी सिखों पर लागू होता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"उन कपड़ों को पहनने से बचें, जिनमें शरीर असहज हो और मन बुरे विचारों से भरा हो।" एसजीजीएस, पृष्ठ 16

इस प्रकार, सिक्खों को एहसास होगा कि किस प्रकार के कपड़े दिमाग को बुरे विचारों से भर देते हैं और उन्हें इससे बचना चाहिए। सिक्ख महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे कृपाण (तलवार) और अन्य के साथ अपनी रक्षा करें, यह महिलाओं के लिए अद्वितीय है क्योंकि यह इतिहास में पहली बार है जब महिलाओं से अपनी रक्षा करने की उम्मीद की गई थी और उनसे शारीरिक सुरक्षा के लिए पुरुषों पर निर्भर होने की उम्मीद नहीं की गई थी।

SGGS उद्धरण: गुरु नानक जी का कथन है कि, "पृथ्वी और आकाश में, मुझे कोई दूसरा दिखाई नहीं देता। सभी महिलाओं और पुरुषों के बीच, उसका प्रकाश चमक रहा है।" Sggs पृष्ठ 223। स्त्री से, पुरुष का जन्म होता है; स्त्री के भीतर पुरुष की कल्पना की जाती है; महिला से उसकी सगाई और शादी हो चुकी है। महिला उसकी दोस्त बन जाती है; नारी के माध्यम से भावी पीढ़ियां जन्म लेती हैं। जब उसकी स्त्री मर जाती है, तो वह दूसरी स्त्री की तलाश करता है; स्त्री के लिए वह बाध्य है। तो उसे बुरा क्यों कहते हो? उसी से राजा उत्पन्न होते हैं। स्त्री से स्त्री का जन्म होता है; स्त्री के बिना, कोई भी नहीं होगा। एसजीजीएस पृष्ठ 473

दहेज के संबंध में: "हे मेरे प्रभु, मुझे अपना नाम मेरी शादी के उपहार और दहेज के रूप में दें।" श्री गुरु राम दास जी, पृष्ठ 78, एसजीजीएस की पंक्ति 18

पर्दा प्रथा के विषय में: "रुको, ठहरो, ओ वधु - अपना चेहरा घूंघट से मत ढ़को। अंत में, यह तुम्हें आधा आवरण भी नहीं देगा।" तुमसे पूर्व जो चेहरे पर पर्दा किया करती थी, उनके पदचिन्हों पर मत चलना। अपने चेहरे पर पर्दा करने का एकमात्र गुण यह है कि कुछ दिनों के लिए लोग कहेंगे कि, "क्या गुणी दुल्हन आई है"। तुम्हारा यह घूंघट तभी सत्य हो जाएगा है, जब तुम भगवान् की महिमा को छोड़ते, नाचते और गाते हैं। -पृष्ठ 484, SGGS

महिलाएँ और वास्तव में सभी आत्माओं को आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित किया गया था: "आओ, मेरी प्यारी बहनों और आध्यात्मिक साथियों; मुझे अपने आलिंगन में कसकर गले लगाओ। आओ एक साथ जुड़ें, और अपने सर्वशक्तिमान पति भगवान् की कहानियां सुनाएं।" - गुरु नानक, एसजीजीएस पृष्ठ 17, ।

"मित्र, अन्य सभी वस्त्र सुख को नष्ट कर देते हैं, अंगों पर जो पहना जाता है वह पीड़ा देते हैं और गलत सोच से मन को भर जाता है" - SGGS पृष्ठ 16

पगड़ी का महत्व

पगड़ी हमेशा एक सिक्ख का एक अभिन्न अंग रही है। लगभग 1500 A.D और सिक्ख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक के समय से, सिक्ख पगड़ी पहनते आ रहे हैं।

पगड़ी या "पगरी" को प्रायः "पग" या "दस्तार" के रूप में छोटा किया जाता है, एक ही वस्त्र के लिए विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग शब्द हैं। ये सभी शब्द पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अपने सिर को ढंकने के लिए पहने जाने वाले परिधान को संदर्भित करते हैं। यह एक लंबे दुपट्टे की तरह कपड़े का एक टुकड़ा होता है जो सिर के चारों ओर लपेटा जाता है या कभी-कभी एक आंतरिक "टोपी" या पटका होता है। परंपरागत रूप से भारत में, पगड़ी केवल समाज में उच्च स्थिति के पुरुषों द्वारा पहनी जाती थी; निम्न स्थिति या निम्न जातियों के पुरुषों को पगड़ी पहनने की अनुमति नहीं थी।

हालांकि गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा बिना कटे बालों को रखना अनिवार्य था, जो कि पांच के या विश्वास के पांच लेखों में से एक था, यह लंबे समय से 1469 में सिक्ख धर्म की शुरुआत से ही सिक्ख धर्म से जुड़ा हुआ है। सिक्ख धर्म दुनिया में एकमात्र धर्म है। जिसमें सभी वयस्क पुरुषों के लिए पगड़ी पहनना अनिवार्य है। पश्चिमी देशों में पगड़ी पहनने वाले अधिकांश लोग सिक्ख हैं। सिक्ख पगड़ी को दस्तार भी कहा जाता है। 'दस्तार' फारसी शब्द है। इसका अर्थ है 'हैंड ऑफ गॉड' जिसका अर्थ है उनका आशीर्वाद।

सिक्ख अपनी कई और विशिष्ट पगड़ियों के लिए प्रसिद्ध हैं। परंपरागत रूप से, पगड़ी सम्मान का प्रतिनिधित्व करती है, और लंबे समय से केवल बड़प्पन के लिए आरक्षित एक वस्तु रही है। भारत के मुगल शासन के काल में, केवल मुसलमानों को पगड़ी पहनने की अनुमति थी। सभी गैर-मुस्लिमों को एक पगड़ी पहनने से दृढ़ता से रोक दिया गया था।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने मुगलों द्वारा इस चुनौति की अवहेलना करते हुए अपने सभी सिक्खों को पगड़ी पहनने के लिए कहा। यह उच्च नैतिक मानकों की मान्यता में पहना जाना था, जिसे उन्होंने अपने खालसा अनुयायियों के लिए तैयार किया था। वह चाहते थे कि उनका खालसा विशिष्ट हो और "शेष संसार से अलग दिखने" के लिए दृढ़ संकल्पित हो। वह चाहते थे कि वे सिक्ख गुरुओं द्वारा निर्धारित अद्वितीय मार्ग का अनुसरण करें। इस प्रकार, एक पगड़ीधारी सिक्ख हमेशा भीड़ से अलग खड़ा होता है, जैसा कि गुरु का इरादा था; क्योंकि वह चाहते थे कि उनके 'संत-सैनिक' न केवल आसानी से पहचाने जा सकें, बल्कि आसानी से मिल भी जाएँ।

जब एक सिक्ख पुरुष या महिला पगड़ी पहनती है, तो पगड़ी केवल कपड़े का एक फीता नहीं रह जाती है; क्योंकि यह सिक्ख के सिर के साथ एक ही हो जाती है। पगड़ी साथ ही सिक्खों द्वारा पहनी जाने वाली आस्था की चार अन्य वस्तुओं का अत्यधिक आध्यात्मिक और लौकिक महत्व है। जबकि पगड़ी पहनने से जुड़े कई प्रतीक हैं - स्वतंत्रता, समर्पण, स्वाभिमान, साहस और धर्मपरायणता, लेकिन!, सिक्खों द्वारा पगड़ी पहनने का मुख्य कारण उनके संस्थापक के लिए उनका प्यार, आज्ञाकारिता और सम्मान दिखाना है। खालसा गुरु गोबिंद सिंह।

उपरोक्त मुख्य अंश में कथित शब्दों को किसी और से बदलने की आवश्यकता है। 'इसका कारण' हो सकता है

"पगड़ी हमारे लिए हमारे गुरु का उपहार है। इस तरह हम स्वयं को सिंह और कौर के रूप में ताज पहनाते हैं जो हमारी अपनी उच्च चेतना के प्रति प्रतिबद्धता को सिंहासन पर बिठाती है। पुरुषों और स्त्रियों के लिए समान रूप से, यह अनुमानित पहचान स्वत्व, सभ्यता और विशिष्टता व्यक्त करती है। । यह दूसरों के लिए एक संकेत है कि हम अनंत की छवि में रहते हैं और सभी की सेवा करने के लिए समर्पित हैं। पगड़ी पूरी प्रतिबद्धता के अलावा किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। जब आप अपनी पगड़ी बांधकर सबसे अलग दिखना चुनते हैं, तो आप निडर होकर एक अकेले के रूप में खड़े होते हैं। छह अरब लोगों से अलग खड़ा व्यक्ति। यह सबसे उत्कृष्ट कार्य है।" (सिक्खनेट से उद्धृत)

विनम्रता आपकी यात्रा का मुख्य सार है

विनम्रता सिक्ख धर्म का एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। इसके अनुसार सिक्खों को ईश्वर के सामने विनम्रतापूर्वक झुकना चाहिए। विनम्रता या नम्रता, पंजाबी में निकटवर्ती शब्द हैं। नम्रता एक गुण है जिसका गुरबाणी में उत्साहपूर्वक प्रचार किया जाता है। इस पंजाबी शब्द का अनुवाद "नम्रता", "उदारता" या "विनम्रता" है। ऐसा मनुष्य जिसका मन इस विचार से विचलित नहीं होता है कि वह किसी से बेहतर या अधिक महत्वपूर्ण है।

समस्या क्षेत्र - उपरोक्त वाक्य सही नहीं है उपरोक्त वाक्य पूर्ण नहीं है

यह सभी मनुष्यों के पोषण के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है और एक सिक्ख की मानसिकता का एक अनिवार्य हिस्सा है और यह गुण हर समय सिक्ख के साथ होना चाहिए। सिक्ख शस्त्रागृह में अन्य चार गुण हैं : सत्य (सत), संतोष (संतोख), करुणा (दया) और प्रेम (प्यार) है।

एक सिक्ख के लिए ये पाँच गुण आवश्यक हैं और इन गुणों को आत्मसात करने और उन्हें अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाने के लिए गुरबाणी का ध्यान और पाठ करना उनका कर्त्तव्य है।

गुरबाणी हमें क्या बताती है:

"विनम्रता का फल सहज ज्ञान से प्राप्त शांति और आनंद है। विनम्रता के साथ वे उत्कृष्टता का खजाना ईश्वर का ध्यान करना जारी रखते हैं। ईश्वर से अभिज्ञ प्राणी विनम्रता में डूबा हुआ है। जिसका हृदय दयापूर्वक विनम्रता के साथ स्थिर है। सिक्ख धर्म विनम्रता को ईश्वर के समक्ष भिक्षा पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

गुरु नानक, सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु :

"अपने मन में प्यार और विनम्रता के साथ सुनना और विश्वास करना, अपने भीतर गहरे पवित्र मंदिर में स्वयं को ईश्वर के नाम से शुद्ध करें।"- SGGS पृष्ठ 4

"संतोष को अपने कान की बाली बना लो, विनम्रता को अपने भिक्षापात्र बना लो, और ध्यान को अपने शरीर पर ज्ञलगाने वाली भस्म बना लो।"- एसजीजीएस पृष्ठ 6।

"विनम्रता के क्षेत्र में, शब्द सौंदर्य है। वहाँ अतुलनीय सुंदरता के रूप बनाए जाते हैं।" SGGS पृष्ठ 8

"विनम्रता, उदारता और अंतर्ज्ञान मेरी सास और ससुर हैं" -SGGS पृष्ठ 152।

आध्यात्मिकता की ओर यात्रा

गुरु ग्रंथ साहिब एक शाश्वत जीवित गुरु है, जो सिक्ख गुरुओं, हिंदू और मुस्लिम संतों की एक काव्य रचना है। यह संकलन उनके माध्यम से समस्त मानव जाति के लिए ईश्वर की ओर से एक उपहार है। गुरु ग्रंथ साहिब का दृष्टिकोण ईश्वरीय न्याय पर आधारित समाज का किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के बिना है। जबकि ग्रंथ हिंदू धर्म और इस्लाम के धर्मग्रंथों को स्वीकार करता है और उनका सम्मान करता है, यह इनमें से किसी भी धर्म के साथ नैतिक सामंजस्य नहीं दर्शाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में महिलाओं को पुरुषों के बराबर की भूमिका के साथ बहुत सम्मान दिया जाता है। महिलाओं के पास पुरुषों के समान आत्माएं होती हैं और इस प्रकार मुक्ति प्राप्त करने के समान अवसर के साथ आध्यात्मिकता के उच्च स्तर को प्राप्त करने का समान अधिकार होता है। महिलाएँ प्रमुख धार्मिक सभाओं सहित सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं।

सिक्ख धर्म समानता, सामाजिक न्याय, मानवता की सेवा और अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता की वकालत करता है। सिक्ख धर्म का आवश्यक संदेश दैनिक जीवन में करुणा, ईमानदारी, विनम्रता और उदारता के आदर्शों का अभ्यास करते हुए हर समय आध्यात्मिक भक्ति और ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखना है। सिक्ख धर्म के तीन मूल सिद्धांत ध्यान और ईश्वर को याद करना, ईमानदारी से जीने के लिए काम करना और दूसरों के साथ साझा करना है।

आत्मा के लिए इस आध्यात्मिक यात्रा पर जाने का प्रयास करने के लिए बधाई। अनुवाद कभी भी मूल के करीब नहीं हो सकता, खासकर जब पूरा गुरु ग्रंथ साहिब कविता में हो और रूपकों का उपयोग कार्य को अत्यधिक कठिन बना देता है। दिव्य संदेश में, हिंदु, मुस्लिम पौराणिक कथाओं में प्राय: प्रह्लाद, हिरण्याक्ष, लक्ष्मी, ब्रह्मा आदि का प्रयोग किया जाता है। कृपया इन्हें अक्षरशः न पढ़ें बल्कि इनके अंतर्निहित संदेश को समझें। ध्यान इस तथ्य पर है कि ईश्वर एक है और उसके साथ मिलन ही मानव जीवन का लक्ष्य है।

यह कार्य वर्षों से कई स्वयंसेवकों द्वारा किया गया है, ताकि आप तक आपकी भाषा में ईश्वरीय संदेश पहुँचाया जा सके। यदि आपका कोई प्रश्न हैं तो कृपया walnut@gmail.com पर बेझिझक ईमेल करें और हमें इस यात्रा में आपके साथ जुड़ना अच्छा लगेगा।